॥ चतुर्थ अध्याय ॥

"" अध्याय चार ""

" अपरा " काव्यसंकलन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

४ : १ : १ – छायावाद

४ : १ : २ – छायावाद की मुख्य परिभाषाऐं

४ : १ : ३ – छायावाद की मान्यताऐं

४ : १ : ४ – छायावाद और निराला

४ : १ : ५ – वैयक्तिकता

४ : १ : ६ – प्रकृति का चित्रांकन

४ : १ : ७ – रहस्यपरकता

४ : १ : ८ – मानवतावाद

४ : १ : ९ सौंदर्य एवं प्रेम

४ : १ : १० – वेदना और निराशा

४ : १ : ११ – प्रतिकात्मकता

४ : १ : १२ – चित्रात्मक भाषा और लाक्षणिक पदावली

४ : १ : १३ – संस्कृतनिष्ठ कोमलकांत पदावली

४ : १ : १४ – संगीतात्मकता

४ : १ : १५ – [illegible]यात्मकता

४ : १ : १६ – अलंकारिकता

४ : १ : १७ – मानवीकरण

४ : १ : १८ – सारांश

४ : २ : १ – रहस्यवाद

४ : २ : २ – रहस्यवाद और निराला

४ : २ : ३ – अपरा में जिज्ञासा की स्थिति

४ : २ : ४ – अपरा में विरह भावना की स्थिति

४ : २ : ५ – मिलन की स्थिति

४ : २ : ६ – प्रकृतिपरक रहस्यवाद

४ : २ : ७ – योगपरक रहस्यवाद
४ : २ : ८ – प्रेमपरक रहस्यवाद
४ : २ : ९ – भक्तिपरक रहस्यवाद
४ : २ : १० – सारांश
४ : ३ : १ – प्रगतिवाद
४ : ३ : २ – निराला और प्रगतिवाद
४ : ३ : ३ – रूढियों के विरुद्ध आन्दोलन
४ : ३ : ४ – शोषितों का करुण गान
४ : ३ : ५ – शोषकों के प्रति घृणा और रोष
४ : ३ : ६ – क्रान्ति की भावना
४ : ३ : ७ – मार्क्स तथा रूस का गुणगान
४ : ३ : ८ – मानवतावाद
४ : ३ : ९ – वेदना और निराशा
४ : ३ : १० – नारी चित्राण
४ : ३ : ११ – सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्राण
४ : ३ : १२ – सामाजिक समस्याओं का चित्राण
४ : ३ : १३ – कला सम्बधी मान्यताएँ
४ : ३ : १४ – सारांश

४ : ४ : १ – प्रकृति : वर्णन परंपरा
४ : ४ : २ – निराला और प्रकृति वर्णन
४ : ४ : ३ – आलंबन रूप में प्रकृति चित्राण
४ : ४ : ४ – उददीपन रूप में प्रकृति चित्राण
४ : ४ : ५ – मानवीकरण के रूप में प्रकृति
४ : ४ : ६ – अप्रस्तुत के लिए प्रकृति चित्राण
४ : ४ : ७ – वातावरण चित्राण के लिए प्रकृति वर्णन

४ : ४ : ८ – उपदेशिका रूप में प्रकृति चित्राण
४ : ४ : ९ – दूति के रूप में प्रकृति वर्णन
४ : ४ : १० – प्रतिक रूप में प्रकृति वर्णन
४ : ४ : ११ – ऋतु चित्राण
४ : ४ : १२ – दार्शनिक वातावरण के लिए प्रकृति चित्राण
४ : ४ : १३ – प्रकृति का यथातथ्य वर्णन
४ : ४ : १४ – अलंकरण के हेतु प्रकृति चित्राण
४ : ४ : १५ – सारांश
४ : ५ : १ – नारी भावना एवं नारी चित्राण – प्रस्तावना
४ : ५ : २ प्रेयसी रूप में नारी
४ : ५ : ३ माता के रूप में नारी
४ : ५ : ४ – पत्नी के रूप में नारी
४ : ५ : ५ – पुत्री के रूप में नारी
४ : ५ : ६ – नारी के प्रति चित्राण में सौंदर्य एवं सहानुभूति
४ : ५ : ७ – सारांश

४ : ६ : १ – गीतितत्व प्रस्तावना
४ : ६ : २ – वैयक्तिकता या आत्माभिव्यक्ति
४ : ६ : ३ – संगीतात्मकता
४ : ६ : ४ – भाव – प्रवणता
४ : ६ : ५ – संक्षिप्तता
४ : ६ : ६ – सारांश

४ : ७ : १ – राष्ट्रीयता : प्रस्तावना
४ : ७ : २ – सांस्कृतिक जन जागरण
४ : ७ : ३ – भारत के अतिम के सांस्कृतिक वैभव का गौरव
४ : ७ : ४ – देशभक्ति एवं देशप्रेम से युक्त रचनाएँ

४ : ७ : ५ – वर्तमान के प्रति क्षोभ

४ : ७ : ६ – सारांश

४ : ८ : १ – संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिंब

४ : ८ २ – सारांश

४: ९ : १ – यथार्थवादी स्वर – यथार्थवाद तथा निराला

४ : ९ : २ – " अपरा " में यथार्थवादी स्वर

४ : ९ : ३ – सारांश

४ : १० : १ – सौंदर्य और प्रेम सौंदर्य

४ : १० : १:१ – नारी सौंदर्य

४ : १० : १:२ – पुरुष सौंदर्य

४ : १० : १:३ – बाल सौंदर्य

४ : १० : २ – प्रेम

४ : १० : २:१ – व्यक्तिगत अनुभूति युक्त प्रेमभावना

अ] अज्ञात प्रिया के प्रति प्रेम,

ब] पत्नी प्रेम और

क] पुत्री प्रेम

४ : १० : २ : २ – प्रेमिका प्रेम और मुक्त प्रेम

४ : १० : ३ – सारांश

४ : ११ : १ – व्यंग – स्वरूप

४ : ११ : २ – निराला और व्यंग्य

४ : ११ : ३ – " अपरा " काव्यसंकलन में व्यंग्य

४ : ११ : ४ – सारांश

" अपरा " काव्य संकलन निराला के काव्यजीवन का प्रतिनिधित्व करता हैं। तृतिय अध्याय में प्रमुख कविताओं का परिचय किया गया हैं। इस संकलन की हर एक कविता प्रवृतियुक्त हैं, मगर कौनसी प्रवृत्ति अधिक और कौनसी कम हैं, इसकी खोज प्रस्तुत अध्याय में कि जा रही हैं। संभाव्य प्रवृतियो के विशेषताओं की खोज तथ्यान्वेषण के अंतर्गत करेंगे। अब हर एक प्रवृत्ति के तथ्य को एकत्र करके तटस्थ भाव से कौनसी प्रवृत्ति के कितने तथ्य इस काव्य संकलन में मिलते हैं इसका संक्षेप में विचार परामर्श इस अध्याय में किया जा रहा है। परंतु एक मर्यादा निश्चित हो जाने के कारण सभी तथ्यों को विस्तार पूर्व लिखना मेरे लिए असंभव है। इस संकलनमें इन प्रवृत्तियों को खोजने का प्रयास किया जा रहा हैं, क्रम से छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रकृति वर्णन, नारी भावना, राष्ट्रीयता, सौंदर्य और प्रेम, व्यंग्य, यथार्थवादी स्वर आदि। प्रवृत्तियों पर हम कम शब्दों में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

४.१.१ छायावाद :

" छायावाद " काव्यधारा की प्रवृत्तियों की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन करना हमारा लक्ष नहीं हैं परंतु इसका सामान्य परिचय किये बिना हम आगे भी बढ नहीं सकते। मुख्यत: इस काव्यधारा का प्रवाह इतिहासकारों के अनुसार १९१३ - १४ से शुरू होकर १९३५ के आसपास तक रहा। इस काव्यधारा के प्रमुख कवि मुकुटधर पाण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी, नरेन्द्र शर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, रामकुमार वर्मा, भगवतीचरण वर्मा आदि हैं। अत: हम इस धारा के संबध में की गई विशेष एवं महत्वपूर्ण परिभाषाओं से यह परिचित करेंगे कि कौनसी विशेषताएँ इनमें समाई हैं ?

४.१.२ छायावाद की प्रमुख परिभाषाएँ :

१. " छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ ---- प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन। " ---- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :- हिन्दी साहित्य का इतिहास

२. " परमात्मा की छाया आत्मा में पडने लगती है और आत्मा की परमात्मा में यही छायावाद है। " -- डॉ. रामकुमार वर्मा :- हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास

३. " कविता के क्षेत्र में ------- जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी साहित्य में उसे छायावाद के नामसे अभिहित किया गया। " ---- जयशंकर प्रसाद :- काव्य और कला तथा अन्यनिबंध

४. प्रकृति में चेतना का आरोप, सूक्ष्म सौंदर्य, सत्ता का उद्‌घाटन एवं असीम के प्रति अनुरागमय आत्मविसर्जन की प्रवृत्तियों का गीतात्मक एवं नवीन शैली में व्यक्त रूप छायावाद हैं। " --- महादेवी वर्मा :- महादेवी का विवेचनात्मक गद्य

५. "---------- पूर्ववर्ती युग के विरोध में प्रस्फुटित एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोन, एक विशेष दार्शनिक अनुभुति एवं एक विशेष शैली हैं। जिसमें लौकीक प्रेम के माध्यम से अलौकीक का एवं अलौकिक प्रेम के व्याज से लौकिक अनुभुंतियों का चित्रण होता हैं, जिसमें प्रकृति को मानवी रूप में प्रस्तुत किया जाता हैं और जिसमें गीतितत्वों की प्रमुखता होती हैं। " ------ डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त :- साहित्यिक निबंध

६. " छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है " ---- डॉ. नगेंद्र आस्था
६. के चरण

७. प्रकृति और प्रेम छायावाद के मूल विषय हैं। स्वानुभुतिमयता, कल्पना-तिरेक और सूक्ष्माशक्ति की भूमि पर गीत्यात्मकता, ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता और नव्य प्रतिक एवं बिम्ब विधान के साथ विच्छितिमयी भाषा में राष्ट्रीयता, मानवता, नारी, प्रकृति रहस्य, वेदना, अतित पलायन और संघर्ष, प्रणय तथा सौंदर्य की विस्फोटक अभिव्यक्ति ही छायावाद की सर्वमान्य परिभाषा हो सकती है। ---- भगवान देव यादव :- निराला काव्य का वस्तुतत्व।

उपरयुक्त परिभाषा में डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त तथा डॉ. भगवान देव यादव की परिभाषायें अब तक बहुत कुछ समन्वयकारी लगती हैं। इसका कारण यह हैं कि इन परिभाषाओं में छायावाद के स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों ही अर्थ व्यख्यित हैं साथ ही उनमें छायावाद की विशेषताओं को स्पष्टता से इंगित कर दिया गया हैं।

४.१.३ छायावाद की मान्यताएँ :

छायावाद प्रवृत्ति की काव्यगत मान्यताओं को दो वर्गों में रख सकते हैं वस्तुगत तथा शिल्पगत। इसे हम भावपक्ष तथा कलापक्ष और विषय से संबधी तथा शैली या शिल्प भी कह सकते हैं। विषयगत मान्यता या विशेषता इस प्रकार हैं :- वैयक्तिकता, प्रकृति का अंकन, रहस्यपरकता, मानवतावाद, सौंदर्य एवं प्रेम वेदना और निराशा का समावेश। इसी तरह शिल्प या कलापक्ष की मान्यताएँ इस प्रकार :- प्रतीकात्मकता, संस्कृत निष्ठ कोमलकांत पदावली, संगीतात्मकता, ध्वन्यात्मकता, अलंकारिकता मानवीकरण।

४.१.४ छायावाद और कवि निराला :

सन १९१६ में निराला द्वारा रचित " जुही की कली " और उसके संबध में उनके एक मित्र के मुलाकात से गंगाप्रसाद पाण्डेय ने छायावाद से कवि निराला का नाम इस तरह जोडा हैं --- " जुही की कली प्रणायन के साथ - साथ इस युग का नामकरण ------- छायावाद ----- भी निराला ने रखा हैं। " [१] छायावाद नामकरण किसने दिया इसपर अनेक मत हैं, उसपर भी एक शोध निबंध हो सकता हैं, मगर इस धारा से कवि धारा के उपजकाल से संबध रखते हैं। इस धारा का सर्व प्रथम जयशंकर प्रसाद ने शंखनाद किया परंतु विकसित करने का श्रेय कवि निराला को हैं। साहित्य इतिहास में छायावाद १९२० से १९३५ तक दर्शाया हैं, परंतु कवि निराला की " जुही की कली ", " तुम और मैं ", " जागो फिर एक बार " आदि कविताएँ पूर्वयुग में रची गयी हैं।

४.१.५ वैयक्तिकता :

द्विवेदी युग का कवि बहिर्मुख होकर कविता लिखता था जब की छायावाद का कवि अंतर्मुख होकर व्यक्तिगत अंतरंग को चित्रित करता हैं। इस काल की रचनाओं में कवि का "स्व" या " आत्म" स्फूर्त हैं। कवियों ने अपनी अनुभूतियों को उत्तम पुरुष में अभिव्यक्त किया हैं। छायावादी कवियों में प्रसाद " आसूँ", पंतगी ग्रंथी तथा महादेवी के " निहार ", "रश्मी", आदि काव्य संग्रहो में वैयक्तिक जीवन की पिडा एवं वेदना की छाप टंकित हुई हैं। "अपरा" में " हिन्दी सुमनों के प्रति ", "सरोज स्मृति," " विफल वासना ", "मैं अकेला", " स्नेह निर्झर" बह गया हैं," "दान" आदि कविताओं में निराला की वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है।

"सरोज स्मृति " इस कविता को व्यक्तिगत जीवन की अंतरिक झाँकी के कारण ही ऐतिहासिक महत्व मिला हैं। कवि जीवन के संघर्ष, विद्रोह, करुणा आदि भावो को ऐसे चित्रित करते हैं जैसे कविता पढते वक्त उनके जीवन का चलचित्र देखने का अनुभव प्राप्त होता हैं। हिन्दी सेवामें विरत कवि अपने पुत्री की ठीक तरह से सेवा नहीं कर सके। सन १९३५ में लंबी बीमारी के बाद सरोज की मृत्यू हुई। निराला पर एक जबरदस्त आघात हुआ। निराला अपनी भावनाओं को कैसे रोकते, जीवन में दु:ख के सिवा उन्हे मिला ही क्या हैं। जैसे - -

" दु:ख ही जीवन की कथा रही
क्या कहू आज जो नहीं कही
कन्ये गत कर्मों का अर्पन कर
करता मैं तेरा तर्पण " [२]

" हिन्दी सुमनों के प्रति पत्र " इस कविता में कवि का हिनत्व भाव मुख्य हैं। इस में कविने अपनी अवहेलना एवं उपेक्षा से उत्पन्न मानसिक क्षोभ एवं तिक्तता की अभिव्यक्ति मुखर हैं। " राम की शक्ती पूजा " में राम के माध्यम से परोक्ष विधी से अपने ही संघर्ष पूर्ण जीवन की भर्त्सणा की हैं। डॉ. नामवर सिंहजी का मन इस प्रकार दृष्टव्य है -- " चुनौति का ऐसा अकुंठित स्वर हिन्दी छायावाद में नहीं सुना गया, यदि ऐसी चुनौति हिन्दी में कोई दे सकता था -- और एक हद तक दिया भी तो तो एक निराला। " [३]
" विफ्ल वासना " इस कविता में निराला के हृदय की विफलता एक विरहिणी के माध्यम से प्रत्यक्ष विधी से सुन्दर रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। डॉ. नगेंद्र व्यक्तिवाद के रूप में एक मत प्रकट करते हैं वह महत्व पूर्ण हैं --- " छायावाद का कवि आत्मलीन होकर कविता लिखने लगा। उसका यही व्यक्तिभाव प्रसाद में आनन्दवाद और निराला में अद्वैतवाद के रूप में प्रकट हुआ। " [४]

कवि निराला का आयुष्य एक संघर्षी आयुष्य हैं, जिसमें अनेक मोड हैं। असफलता, हताशा, निराशा, अपमान, बाधा, चिन्ता, खिन्नता, पिडा, ग्लानी, विरह एकाकीपन के आदि अनेक भाव इनके काव्य में झलकते हैं।

४.१.६ प्रकृति का चित्रांकन:

प्राचीन काल से आज तक यदि हम मानव इतिहास तथा साहित्य का इतिहास देखेंगे तो प्रकृति मानव मन को अपनी ओर आकृष्ट करती आयी हैं। प्रकृति के अनेक पहलू कवि के आकर्षण के विषय बने हैं। छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण का प्रचुरता दृष्टव्य हैं। जिस में प्रकृति पर चेतना का आरोप किया गया हैं। छायावादी के प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया हैं। " अपरा " में " बादल राग " इस रचना में प्रकृति आलंबन रूप में वर्णित हैं। इस रचना में प्रकृति के कोमल रूप के साथ साथ कठोर रूप का वर्णन महत्वपूर्ण हैं। बादल यहाँ क्रांन्ती का प्रतिक हैं, जहाँ उसे विप्लव-कारी एवं भयंकर कहा और कोमल रूप में वह दृष्टिगत होता हैं वहाँ उसे पालन कर्ता एवं उदार कहा हैं।

प्रकृति चित्रण में "सन्ध्या सुन्दरी" एक सुन्दर कविता हैं। इसमें सन्ध्या की व्यापकता का वर्णन अत्यंत व्यापकता के साथ किया हैं। संध्या का वातावरण मन गति एवं सूक्ष्म गतिसे छाता हैं, जिसके निस्तब्ध वातावरण का सजीव चित्रण हुआ हैं। बाद में चारों और अंधकार एवं गंभीरता का साम्राज्य छा जाता हैं, और उस गंभीर वातावरण में एक तारा चमकता हैं। अत: यह निराला की प्रकृति वर्णन संबधी उच्चतर कविता हैं।

"जुही की कली" निराला की प्रथम रचना हैं। इस में प्रकृति तत्वों में प्रेम के परिकल्पना की स्थापना की हैं। छायावादी कवियोंने मन की पिडा संघर्ष की घटना प्रेम की भावना व्यक्त करने के लिए प्रकृति का माध्यम चुना हैं।

इन कवियों में और रीति कालीन कवियों में फर्क इतना है रीति कालीन कवि प्रेम के मिलन विरह तथा नायक - नायिका सौंदर्य को चित्रित करते समय प्रकृति का सहारा लेते थे परंतू छायावादी उससे भी आगे जाकर मानव मन के सभी भावों को प्रकृति का आवरण देने लगे। आधुनिक युग में कवि बुध्दिमानी है जो हर एक विषय को अधिक तत्वों में बाँधता हैं। जुही की कली में प्रकृति के माध्यम से भोग के सारे उपकरण एकत्र किए हैं। विरहानुभुति, चेतनाशून्य सुन्दरता का प्रतीक जुही मध्यरात्री का निस्तब्ध वातावरण उद्दाम भावना को जागृत करता हैं अत: मलयानिल के आनेपर उसके साथ मिलन क्रिया में कार्य-रत वर्णन मादकता पूर्वक नजर आता हैं। सच तो निराला ने इस कविता में वासना की पुष्ठी का आयोजन किया हैं। प्रकृति के माध्यम से निरालाने इस कविता में कामभावना के उद्दीपन रूप को सजीव चित्रांकित किया हैं।

" यमुना के प्रति " इस कविता में भावों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की हैं। उनकी दृष्टि में बादल, प्रपात, यमुना सबकुछ चेतन हैं। वह यमुना से पूछते हैं -- हे यमुने! तू विस्मृति की किस वीणा से रह रहकर उठनेवाली दु:ख भरी झंकार के समान उठ उठकर उकता उकताकर उत्सुकता से स्मृति के दृढ द्वारों को खोल रही हैं। अर्थात सुदूर अतित की खोई हुई स्मृति ओंको जागृत करने का प्रयत्न करती हो।

प्रकृति के प्रभातकालीन सुषमा का वर्णन " नाचे उस पर श्यामा " की पहली पंक्तीयों में किया हैं। वसंत ऋतू में गोमती नदी के तट के प्रात:कालीन छटा का वर्णन " दान " कविता में देखने को मिलता हैं। "प्रभाती" इस कविता में प्रभात का वर्णन उपदेशिका के रूप में हुआ हैं। भर देते हो, तरंगो के प्रति, जागो फिर एक बार, तुम और मैं, बादल, बनबेला, वसंत आया, प्रेयसी, स्वप्नस्मृति आदि अनेक कविताओं में उषा: संध्या रात्री के साथ साथ

प्रपात, फूल, जलद तथा सभी ऋतुओं का विशेष चित्रण प्राप्त होता हैं।

४.१.७ रहस्यपरकता :

छायावाद के अन्य कवियों के समान निराला ने अपनी रहस्यभावना को जिज्ञासा तथा कौतुहल के रूप में प्रकट किया हैं। प्राय: छायावादी के सभी आलोचको ने इस काव्यधारा में दार्शनिक अनुभति अथवा अध्यात्मिकता का पाया जाना आवश्यक माना हैं। छायावाद में बाह्य पदार्थों की अपेक्षा आंतरिकता की प्रवृत्ति अधिक होती हैं। यह आंतरिकता या अंतर्मुखी प्रवृत्ति मनुष्य को रहस्यवाद की ओर अग्रसर करती हैं। बहीरंग जीवन से समेटकर जब कवि की चेतना ने अंतरंग में प्रवेश किया तो कुछ बौधिक जिज्ञासाएँ जीवन और मरन संबंधी, प्रकृति और पुरुष संबधी, आत्मा और विश्वात्मा संबधी उसके मन में उत्पन्न होती हैं। इन जिज्ञासाओं का कवि भावना के आधार से समाधान पाने की कोशिश करता हैं., तब उसमें रहस्यपरकता अनायास अनुभुत होने लगती हैं। " अध्यात्मफल " में ब्रम्ह और संसार का अद्भूत समन्वय हैं। संसार से मार खाकर कवि का दिल हिल गया किंतु वह चूँ तक नहीं कर पाया। कवि का कहना हैं कि जीवन का आनंद उसी को मिलता है, जो साहस के साथ जीवन संघर्ष में संघर्षों का सामना करता हैं। आत्मबल आंतरिक पवित्रता सापेक्ष हैं।

" खेत में पड़ भाव की जड़ जड़ गयी,
झुलते थे फूल भावी संपदा " [५]

" तुम और मैं " कविता में निराला ने जीव और ब्रम्ह के सम्बध की अभिव्यक्ति विविध प्रकार से की हैं। अत: यह दर्शन प्रधान कविता हैं। अपनी जीवन की उत्तप्तता को शीतल बनाने के लिए "भर देते हो" इस कविता

में कवि रहस्यसत्ता की कृपा का गुणगान करता हैं। "ध्वनि" में कवि अपने दिर्घ जीवन के प्रति अस्वस्थ हैं और काव्य सृजन के सारे स्मों को प्रकृति में प्रतिछायित कर उन्हें अनंत की ओर उन्मुख करने के प्रयत्नमान हैं। " जुही की कली " में आत्मा परमात्मा का मिलन तो स्वप्न स्मृति में लौकिक वेदना पर अध्यात्मक की छाया हैं।

राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास, हताशा, अर्चना, देवी सरस्वति, भगवान बुध्द के प्रति, विफ्ल वासना, अंजली, शोष, तरंगो के प्रति, प्रपात के प्रति आदी कविताओं में रहस्य परत्व अभिव्यक्ति सशक्त - अशक्त स्म में हुयी हैं।

४.१.८ मानवतावाद :

महाकवि महाप्राण निराला व्यक्तित्व में हम देख चुके हैं कि रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, अरविंद तथा टैगोर के दर्शन संबंधी विचारों का प्रभाव आपके कृतित्व पर हैं। छायावादी कवि सारे संसार से प्रेम करता हैं। उसके लिए भारतीय अभारतीय में कोई अंतर नहीं हैं। वह सारे संसार में एक आत्मा व्याप्ति को स्विकार करता हैं। विश्व मानवता की प्रतिष्ठा उसका आदर्श "बादल राग" में कवि समाज की विषमता से पीडित होकर रहीम के भांति प्रेम दर्शाता हैं।

" विप्लव रव से छोटी ही शोभा पाते।
अटालिका नहीं हैं रे
आतंक भवन, -------। [६]

"तोडती पत्थर" में भरी दोपहरी में पत्थर तोडनेवाली मजदूरनी का करुणोत्पादक चित्र प्रस्तुत किया हैं। इसमें मजदूरनी को सहनशीलता से

गौरवान्वित न करके समाज के विरुध्द असंतोष और अपनी सहहृदयता से मानवता भावना को व्यक्त किया हैं। " दलित जनपर करो - करुणा में निराला इश्वर से प्रार्थना करते हूए कहते हैं, कि मेरा वैभव देखकर मेरा सिर नीचा न हो जाए मेरा उद्धत मन स्थीर रहे मुझे निरंतर जीवन क्रम से पार करो और कृपा करो कि तुम्हारे प्रति मेरी भक्ति करुणा प्रवाहित होती रहें। इस कविता में लोक-मंगल की इस भावना का दर्शन जो समस्त मानवता के कल्याणार्थ प्रकट हुआ हैं। जैसे -

" दलित जनपर करो - करुणा।
दिनता पर उतर आए प्रभु तुम्हारी शक्ति अरुणा। " [७]

दिन, दान, भिक्षुक, विधवा, बनबेला, छत्रपति शिवाजी का पत्र, राम की शक्ति पूजा आदि कविताओं में मानवता तथा आदर्शता का चित्रण हुआ हैं। जिसतें निराला की सहहृदयता, सामाजिकता प्रकट होती हैं।

४.१.९ सौंदर्य एवं प्रेम :

छायावादी कवि का सौंदर्य एवं प्रेमचित्रण अपेक्षाकृत सूक्ष्म एवं श्लील हैं। सौंदर्य और प्रेम निरुपण में अपरा में प्राय: नयन उरोज और केशोपाशों का अधिक वर्णन किया हैं। अनुभुत सूख आत्मसंतोष, आशिष, पवित्रता, आल्हाद, निष्कामता के साथ साथ काम मुक्ति के चित्रों को सफलतापूर्वक सबल व्यक्त किया हैं। फिर भी उन्होंने नारी संबंधी सौंदर्य एवं प्रेम चित्रण करते समय उसे भाव दिशाओं के चित्रण का साधन माना हैं। इस कथन में प्रस्तुत उदाहरण --

" चुभते पर हाय नाथ।
× × × ×
× × × ×
वैसे ही मैने अपना सर्वस्व गॅवाया, - - - | ८

छायावादी काव्य का प्रेम स्वच्छंद हैं। उसमें प्राय: लौकीक के माध्यम से अलौकीक प्रेम को अधिक मुखर किया गया हैं। छायावादी कवि सौंदर्यीकन का ही नहीं सौंदर्य से भी प्रेम करता हैं। सौंदर्यांकन एकदम सूक्ष्म समन्वयात्मक और मर्म स्पर्शी भी हैं।

प्रथम साक्षात्कार का बडा ही मनो मुग्धकारी चित्रण निराला ने "राम की शक्ति पूजा" [१९३६] में किया हैं। राम के हृतोत्साहित हृदय में सीता की स्मृति वह मिथिला का प्रथम मिलन बिजली सा क्रौंध जाता हैं। कवि " निराला " ने इस घंटना का वर्णन अत्यंत सूक्ष्म सांकेतिक एवं गरिमामय शैली में प्रस्तुत किया हैं। राम के नैराश्यघन अंधकार हत हृदय में जानकी की कुमारिक छवि बिजली सी क्रौंध गयी। जनक वाटीका से लतान्तराल प्रथम मिलन याद आया। नयनों का नयनों से गुप्त मौन किन्तु प्रिय संभाषण हुआ। वह पलको का उत्थान पतन, वह कंपन, अनुराग, पराग का झरना वह नव जीवन परिचय। कितनी मधुरिमा हैं उसके स्मरण में ---

" देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
× × × ×
जानकी नयन कमनीय प्रथम कंपन तुरीया। " [९]

स्म वर्णन के साथ साथ प्रणय भावना के विविध स्मों को कविने अनेक कविताओं में प्रकट किया हैं। कवि "प्रेयसी" कविता में यौवन आगमन से युक्त युवती की अवस्था का मार्मिक चित्रण किया हैं। जिसमें प्रथम वासना उद्दीपित होती हैं परंतु बाद में मानसिकता एक पुष्टीपाती हैं। इस संदर्भ में विश्वंभर "मानव" का यह मत महत्त्वपूर्ण सौंदर्यवर्णन में निराला वासना से मानसिकता और मानसिकता से दिव्यता की ओर बढ गये हैं। " [१०] निराला के प्रेम की अभिव्यक्ति उनके जीवन के अनुभवोंसे जुडी हैं। जब की उनका शारीरिक आकर्षण

का उत्साही भाव कवि अशारीरीकपावन अनुभुति तक पहूँचता हैं। प्रेम जीवन की समृध्दि हैं, वह जीवन के आल्हाद और उन्माद की अनुभुति हैं, तो क्रमश: आत्मतीर्ण में परिणत होकर जीवन की पवित्रता की हैं। तो पारलौकिक प्रेमाभिव्यक्ति सत्व की सिना से स्पर्श करती हैं। कवि तरंगते की असीमता मे पर्यवसान करता हुआ कहता हैं --

" तुम असिम में ले जाओ
मुझे न कुछ तुम दे जाओ। १० अ

"अपरा" में इस दृष्टि सें "जुही की कली", शोक धारा, सरोज स्मृति, विफ्ल वासना, बनबेला, तरंगो के प्रति, स्वप्न स्मृति आदि कवितायें महत्वपूर्ण हैं।

४.१.१० वेदना और निराशा :

युगानुरूप वेदना की विकृति छायावाद में हुई हैं। यह विकृत्ति कहीं पर अनन्न वेदना के रूप में तो कही करूणा और निराशा के रूप में हुई हैं। निराला के अभिव्यक्त वेदना और निराशा पर तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की असफलता, प्रथम महासमर के परिणाम तथा जीवन काल में आपबीति घटनाओं का असर प्रमुख विषय हैं। "प्रसाद" की वेदना "आसूँ" के जरिये तो महादेवी की वेदना निरभरी दु:ख की बदली के जरिए बह पडी। निराला की वेदना एवं निराशा उनके काव्य जीवन में रह रहकर शुरू से अंततक बह पडी हैं। इस दृष्टि से "अपरा" में सरोज स्मृति, हिन्दी सुमनों के प्रति, उक्ति, मरण दृश्य, मैं अकेला, हताश, गहन हैं अंधकार स्नेह निर्झर बह गया आदि कविताओं में वेदना एवं निराशा मुखर हैं।

लगातार आपत्तियाँ, तथा अर्थसंकट से कवि जीवन के अंतीम दिनों तक

जुझते रहे। कुटुंब के सदस्यों की एक के बाद एक लगातार मृत्यू घटनायें तथा साहित्य जगत में उपेक्षा इनके आहत मन के मुख्य दो कारण रहें। ऐसे वातावरण में कवि अपराज्य रहें। उनके काव्य की प्रताड़ना होने से निराला आहत हो चुके थे मगर उनका आहृत मन अपनी पीडा को समझाने को कोशीश कुछ रचनाओं मे करता हैं। कविने आलोचको को कभी उत्तर स्वरूप लेख नही छपवाये मगर इन्होंने काव्य से हो उत्तर लौटाये हैं। यह उनका स्वभाव मनावैज्ञानिक तथ्य साम्यवाद से साम्यत्व रखता हैं। उदा.

" बहु रस साहित्य यदि विपुल पविन पढ।
× × ×
क्या यदि कहो। " [११]

अपरा की कुछ कविताओं में हताशा टुटन एकाकीपन की अभिव्यक्ति मिली हैं। कुछ ऐसी भी कवितायें हैं उनमें निराशा एवं आस्था के भाव भी पाये गये हैं। जीवन को निराशा एव हीनता की सबल अभिव्यक्ति का एक उदाहरण ---

" जीवन चिरकलिन वज्र क्रन्दन।
× × ×
मेरा जग हो अन्तर्धान, - - - - -। " [१२]

निराला के जीवन में शोक की अंतिम परिणाती सरोज स्मृति में प्रकट हुई हैं। यह कविता उनके पूरे जीवन का विधी लेखा प्रस्तुत करती हैं। यह ज्ञात होता हैं कि कवि हृदय पर कितने वज्राघात हुये जिससे वह मर्माहत होकर दूर ही जाते हैं।

" दु:ख ही जीवन की कथा रही
× × ×
कर करता मैं मेरा तर्पण " [१३]

इस प्रकार और भी ऐसी कवितायें हैं जिनमें कवि अपने वैयक्तिक जीवन की पिड़ा कोन तथा हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदि को शब्द बध्द करते हैं।

छायावादी काव्यप्रवृत्तियों की शिल्पगत तथा कलापक्ष की विशेषताऐं इस प्रकार :-

४.१.११ प्रतिकात्मकता :

छायावाद में अंतर्मुखता की प्रवृत्ति के कारण बाहयस्थुलता का चित्रण न होकर सुक्ष्मता का चित्रण हुआ हैं। प्रकृति चित्रण छायावाद की प्रमुख विशेषता रही। प्रकृति की विभिन्न छटाओं में कवि ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया हैं। प्रकृति पर मानवीय भावनाओं का आरोप किया और उसका संवेदनात्मक रुप में चित्रण किया गया। उदा. फूल सुख अर्थ में, शुल दु:ख के अर्थ में, उषा प्रफुल्लता के अर्थ में, संध्या उदासी के अर्थ में आदि इत्यादि। "अपरा" काव्यसंकलन में सुक्ष्म भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की हैं। इसके लिए निराला ने सूक्ष्म प्रतीको एवं लाक्षणिक शैली का प्रयोग किया हैं। "जुही की कली " [१९१६] में परम सत्ता का संकेत निराला के प्रतीक शक्ति का परिचय हैं। "जागृति में सुप्ति थी" [१९२२] में प्रकृति द्वारा स्वप्न भावना को चित्रित किया हैं। "संध्या सुंदरी" [१९२१] में परी का प्रतिक चित्रित किया हैं। बादल निराला के व्यक्तित्व एवं युग के व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता हैं। अपने युग के प्रति कवि के मन का असंतोष " बादल राग " [१९२०] में यों व्यक्त हुआ हैं --

" रुध्द कोष है क्षुब्ध तोष
× × ×
ऐ विप्लव के वीर। " १४

४.१.१२ चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली :

कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा होती हैं। इस गुण के कारण बिम्बगृहिता आ जाती हैं। छायावादी कवियों ने सीधी साधी भाव संबधित भाषा को लेकर लाक्षणिक और अप्रस्तुत विधानों से युक्त चित्रमयी भाषा का प्रयोग किया हैं। "अपरा" काव्यसंकलन में अनेक जगह पर लाक्षणिक पदावली का प्रयोग हुआ हैं। "छत्रपती शिवाजी का पत्र " इस कविता में लाक्षणिक पदावली का प्रयोग इस प्रकार हैं --

" आपस में लड लडकर घायल मरेंगे सिंह
जंगल में गीदड ही गीदड रह जायेंगे --" [१५]

४.१.१३ संस्कृतनिष्ठ कोमलकांत पदावली :

छायावादी काव्य आदर्शवादी काव्यधारा हैं। तदनुरूप इसमें संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग हुआ हैं। केवल कल्पना के अनुरूप इसकी पदावली भी कोमलकांत हैं। "अपरा" काव्यसंकलन की कविताओं में संस्कृतनिष्ठ कोमलकांत पदावली बहुत सी जगह देखने को मिलती हैं। उसका एक उदाहरण प्रस्तुत हैं --

" किरण दृक पात, आरक्त किसलय सकल;
शाक्त द्रुम, कमल कलि पवन जल स्पर्श चल ;
भाव में शात सतत बह चले पथ प्राण। " [१६]

४.१.१४ संगीतात्मकता :

निराला को संगीत शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। वह स्वंय भी अच्छे गायक थे। उनकी कविता में संगीतात्मकता का सुंदर मिलन मिलता हैं। "अपरा" की पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप इस तरह विद्यमान हैं ---

" बता, कहाँ अब वह वंशीवट ?
कहा गये नटनागर श्याम ?
चल - चरणों का व्याकुल पन घट
कहाँ आज वह वृन्दा धाम ?
कभी यहाँ देखे थे जिनके
किस विनोद की तृषित गोद में
आज पौंछती वे दृगनीर । " १७

४.१.१५ ध्वन्यात्मकता :

निराला ने कई कविताओं मे ध्वन्यार्थ व्यंजना के द्वारा अभिष्ट वातावरण प्रस्तुत किया हैं। "अपरा" में ध्वन्यर्थ व्यंजना द्वारा बादलो की गरज, निर्घोष-जन्य आतंक, जल का बरसना आदि दिखाया हैं। उदाहरण --

" गरजो, हे मन्द्र वज्र स्वर
भरदे भूधर - भूधर
झर झर झर झर धारा झर । " १८

ध्वन्यात्मकता का एक सुंदर उदाहरण " नाचे उसपर श्यामा " इस कविता में मिलता हैं, तथा अन्यत्र भी ऐसे उदाहरण मौजूद हैं।

४.१.१६ अलंकारिकता :

"अपरा" काव्यसंकलन में छायावादी प्रवृत्ति की कविताओं में अलंकारिकता अंत्यत प्रचुर मात्रा में प्रस्फुटित हुई हैं। निराला के काव्य चयन में शब्दालंकार तथा अर्थालंकार अपने आप बन पडे हैं। उनकी उक्तियों में अलंकार बहुत ही स्वाभाविक रूप में पाये गये हैं। संस्कृतनिष्ठ कोमलकांत पदावली में अनुप्रास की छटा प्राय: दिखाई पडती हैं।

४.१.१७ मानवीकरण :

निराला ने प्रकृति की वस्तुओं पर चेतना का आरोप करके उनमें मानवी भावनाओं का संस्पर्श प्राप्त किया। "जुही की कली", "संध्या सुंदरी", "बादल" "प्रपात के प्रति", तरंगो के प्रति", "मैं और तुम" आदि अनेक कविताओं में इसके उदाहरण पाये जाते हैं। जैसे --

" चौंक पडी युवती,
चकित चितवन निज चारो ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज पास,
नम्रमुखी हँसी, खिली,
खेल रंग प्यारे संग। " १९

४.१.१८ सारांश :

"अपरा" काव्यसंकलन की ३/४ादातर कविताएँ छायावादी प्रवृत्तियों से युक्त हैं। अत: कवि भी छायावाद के प्रमुख कवियोंमे से हैं इसमें संदेह नहीं। उन्होंने छायावादी काव्यभाषा को नुतन पदावली देकर उसके भंडार को समृध्द किया तथा भाषा को गूढतम भाव के अभिव्यक्ति केो वहन करने की शक्ति प्रदान की। प्रस्तुत कथन से प्रस्तुत चित्रण की परंपरा को मुक्त किया और प्रस्तुत के स्थान पर अप्रस्तुत कथन की नयी परंपरा अपनायी। नये ढंगसे अलंकारेा की व्यंजना तथा भाषा को ध्वन्यात्मकता एवं संगीतात्मकता प्रदान की गयी मुक्त छंद के तो वे अग्रकवि हैं। निराला ने छायावादी प्रवृत्ति में नवीन दिशा और नयी शक्ति देकर अधिक शक्तिशाली कविताएँ देने का प्रयास "अपरा" में किया हैं।

-: रहस्यवाद :-

४.२.१ रहस्यवाद :

रहस्यवाद आधुनिक काव्य में बिखरी हुई एक प्रमुख प्रवृत्ति हैं। जो प्रवृत्ति निराला के काव्य में भी अभिव्यक्त हैं। रहस्यवाद क्या हैं ? इस सवाल का संक्षिप्त जवाब ढूँढना इस प्रवृत्ति का संक्षिप्त परिचय ही हैं। तो इस प्रवृत्ति का संभाव्य एवं स्थित स्वरूप इस तरह हैं।

बृहत् हिन्दी कोश में रहस्य शब्द के अर्थ इस तरह हैं -- " रहस्य " - गुप्तभेद गोपनीय विषय, मर्म, भेद, निर्जन, एकान्त में घटित वृत्त, दुर्बोध्य तत्व, हँसी - मजाक, एक संप्रदाय। गुप्त, गोपनीय। रहस्यवाद - चिन्तन मनन द्वारा ईश्वर से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापन की प्रवृत्ति, आत्मा परमात्मा के अभेद अनुभूति और अव्यक्त के प्रति आत्मनिवेदन। " [२०] आत्मा, परमात्मा के अमिट संबंध को दृष्टि में रखकर डॉ. रामकुमार वर्मा रहस्यवाद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं --- " रहस्यवाद जीवात्मा की उस अंतर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन हैं, जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शांत और निश्चल संबंध जोडना चाहती हैं, यह संबंधन यहाँ तक बढ जाता हैं कि दोनेा में कुछ अन्तर नहीं रह जाता। जीवात्मा की शक्तियाँ इसी शक्ति के अनंत वैभव और प्रभाव से ओत प्रोत हो जाती हैं। " [२१] तथा डॉ. वर्मा रहस्यवाद की तीन स्थितियों की जानकारी देते हैं ---

१. साधक सारी गोचर अगोचर प्रकृति को एक अनंत शक्ति में लीन देखकर आश्चर्य मुग्ध हो जाता हैं।
२. सांसारिकता का लोप और आत्मा परमात्मा का पारस्पारिक प्रेम।
३. आत्मा और परमात्मा का एकीकरण - भिन्नता समाप्त

डॉ. विनय मोहन शर्मा अव्यक्त के प्रति इंगित को ही रहस्यवाद मानते हैं -- " रहस्य का अर्थ हैं -- गुप्त -- प्रच्छन्न अव्यक्त। और जिसमें गुप्त प्रच्छन और अव्यक्त का उल्लेख हैं - इंगित हैं -- वही रहस्यवाद हैं। " [२२] डॉ. झारी का रहस्यवाद संबंधी मनोगत इस प्रकार सूचित करता हैं कि आधुनिक युग में साहित्य के अंतर्गत रहस्यवाद से अभिप्राय हैं -- " परोक्ष सत्ता के प्रति विस्मय, जिज्ञासा, खोज, रागात्मक अनुभूति और अद्वैत भावना का प्रकाशना। " [२३] तो डॉ. रामरतन भटनागर भारतीय तथा पाश्चात्य रहस्यवादियों का विवरण देते हुए इस मत को तय करते हैं -- " अधिक से अधिक हम यही कह सकते हैं कि रहस्यवाद की भावना संघगत नहीं व्यक्तिगत हैं, साधक एक विराट, अखण्ड, निर्लेप परंतु प्रेममयी सत्ता की कल्पना करता हैं। और स्वयं अपने व्यक्तित्व को उसका अंश मानता हैं। इस अंशानुभूति को वह केवल बुंध्दि [ज्ञान] से ही नहीं पकड पाता, वह उसे हृदय की सारी शक्ति के साथ ग्रहण करता हैं। " [२४] डॉ. बच्चुलाल अवस्थी रहस्यवाद को परम्परागत धारा का नया नाम मानकर उसकी व्याख्या इसप्रकार की हैं -- "यदि ध्वनि-सिध्दांत और इस सिध्दांत की दृष्टि से काव्य शास्त्रीय समिक्षा की जाय तो इस रहस्यवादी काव्य धारा के बीज ऋग्वेद से अब तक के काव्यों में बिखरे मिल जायेंगे। शान्तरस का "शम" स्थायी भाव तत्व ज्ञान मात्र हैं, जो राममयी आसक्तियों के काव्यगत भावों का आधार होकर भी उनसे भिन्न और रहस्यवादी काव्य अपने भाव पक्ष में इससे महत्वपूर्ण व्याख्या नहीं पा सकता। " [२५] राममूर्ति त्रिपाठी के अनुसार "रहस्य" तथा " वाद " शब्दों को अलग माना गया तथा इस रहस्यवाद को का समांतर नहीं बल्कि अलग शब्द माना हैं। " रहस्य " -- अबुंध्दिबोध्य याने बुंध्दि से परे है , तथा रहस्यदर्शियों के कथन के आधार पर लाक्षणिक रूप में " रहस्य " अन् तत्व दर्शनोपयोगी साधनों के अर्थ में भी स्वीकार किया गया हैं -- जिसे बुध्दि बोध्य होते हुये भी " गोपनीय " माना गया। मूलतत्व रहस्य जो सर्वसामान्य के लिए हैं। " वाद " शब्द का प्रयोग निरागृह, निर्भ्रांत

पूर्णतोन्मुखी एवं तात्त्विक कथन के अर्थ में किया गया हैं। जिस के मुल में अखण्डानुभूति और तत्त्वदर्शन विहीत माना हैं। इसके साथ साथ यह भी ध्यान रखने की बात हैं कि यह कथन या बाद अपनी शक्ति में सीमित हैं, - अतः " असीम " का प्रकाशन एक सीमा तक ही कर सकता हैं, पूर्ण प्रकाशन नहीं कर सकता। इस प्रकार इन बातों को ध्यान में रखकर रहस्यवाद की महत्वपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत हैं -- " रहस्यवाद रहस्यदर्शियों का वह सांकेतिक कथन या वाद हैं -- जिसके मूलतत्व में अखण्डानुभूति और तत्वानुभूति विहीत हैं। " [२६] इस प्रकार रहस्यदर्शियों के इस वदन या बाद का मूल तत्व" भी हो सकता हैं और तत्वोपलब्धि की " प्रक्रिया " भी।

बच्चुलाल अवस्थी ज्ञान में रहस्यवाद का ऐतिहासिक विश्लेषण करते समय आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों के रहस्य काव्य में यह विशेषता पाते हैं -- १] भक्ति ज्ञान का समन्वय। २] जीवन की नित्यता ३] समुदित मुक्ति। ४] एकत्वमुलक, मानवतावाद। ५] समस्त रहस्य में गांधी दर्शन का सत्य प्रेम और अहिंसा। का सिंध्दात मुखर हैं।

आधुनिक रहस्यवाद एक काव्य प्रणाली हैं, जिसमें निश्चय के साथ व्यक्त और अव्यक्त के प्रति जिज्ञासा की भावना विहीत रहती हैं और इस सारी प्रक्रिया में लौकिक भावना ही अपना उदात्त रुप ग्रहण करती हैं। यह प्रेमभावना विविध रुपों में प्रकट की गयी हैं। ये रुप इस प्रकार निर्दिष्ट कि ये जाते हैं।

रहस्यवाद की ती कोटियाँ :
१. अनुभूत रहस्यवाद
२. साधनात्मक रहस्यवाद तथा
३. चिन्तन प्रधान रहस्यवाद।

रहस्यवाद की तीन स्थितियाँ :
१. जिज्ञासा
२. विरह तथा
३. मिलन।

रहस्य के मुख्य भेद : १. प्रकृति परक रहस्यवाद
२. योगपरक रहस्यवाद
३. सौंदर्यपरक रहस्यवाद,
४. प्रेमपरक रहस्यवाद.
५. भक्ति परक रहस्यवाद.

रहस्यवाद के दार्शनिक आधार :

उपनिषद्, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, मिमांसा दर्शन आदि।

रहस्यवाद के मुख्य तथ्य :

ब्रम्ह, माया, ब्रम्हमाया का संबंध, जीवात्मा, जीवात्मा - परमात्मा का सबंध, प्राण या जीवन, मृत्यू और उसके बाद, सगुण और निर्गुण ब्रम्ह, सृष्टिकर्ता और विकासवाद।

रहस्यवाद का दार्शनिकपक्ष बहुत ही संश्लिष्ट हैं जिसका विश्लेषित अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं हैं। परंतु योग परक रहस्य में जो हठयोग हैं, उसमें कही आठ तो कही छः चक्रो के भेदन का महत्व हैं। इस तरह हम रहस्यवाद की स्थित स्वरूप की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

४.२.२ रहस्यवाद और निराला :

निराला के काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में पायी जाती हैं। उनके रहस्यवाद प्रेरणा स्त्रोत इस प्रकार हैं -- बंगाल का सुरम्य प्राकृतिक वातावरण जिसके प्रांगण में निराला की बाल्यावस्था एवं युवा-वस्था व्यतित हुई। रविन्द्रनाथ के साहित्य का प्रभाव तथा स्वामी विवेकानंद के प्रभाव के फलस्वरूप रामकृष्ण मिशन के साधुओं के साथ निराला का गहन

संपर्क रहा। स्वामी शारदानन्द का काफी प्रभाव निराला पर पडा था। निराला के पूर्ण रचनाओं में तर्काश्रित रहस्य की भूमि से उतरकर तर्कातीत आस्था की भूमि पर पदार्पण करते हैं। उनकी अध्यात्म या ब्रह्म जिज्ञासा से शुरू होकर विरह तथा मिलन की स्थिति में अभिव्यक्ति पा चुकी है। उन्होंने रहस्य की साधना नहीं की उनके संस्कारों में वेदान्ती प्रभावो और मध्यकालीन भक्त कवियों अस्थामयी भावनाओं का मिश्रण हैं। इन सब के साथ आधुनिक मन की चिन्ता भी हैं। दार्शनिक चिन्तन में विराट शक्ति की ओर संकेत करते है कही उसके प्रति जिज्ञासा झलकती हैं। कही जिज्ञासा विश्वास में बदलती हैं तो कभी अनास्था भी प्रकट हुई हैं, जिसके फल स्वरूप उनके कविता, गीतो में प्रार्थनाये उपलब्ध हैं।

" अपरा"की कविता में रहस्यानुभूति सबल और सप्राण प्रकट हुई हैं। विरह का स्वर कम मात्रा में दिखाई दिया हैं। जिज्ञासा और मिलन की स्थिति अधिक कविताओं मे अभिव्यक्त हुई हैं। प्रथमत: जिज्ञासा विरह तथा मिलन स्थितियोंपर अध्ययन करेंगे --

४.२.३ अपरा में जिज्ञासा की स्थिति :

निराला के रहस्यवादी कविताओं से यह दृष्टीगत होता हैं कि बहुत ही कम मात्रा में जिज्ञासा की स्थिति दिखाई देती हैं। जहाँ "जिज्ञासा" की स्थिती प्राय: मिली है वहाँ ब्रम्ह के प्रति जिज्ञासा भी रहती हैं तथा उसके प्रति कौतुहल विस्मय आनंद भी। कवि निराला समस्त जगत में परमतत्व के सौंदर्य का आभास पाता हैं और उसमें जिज्ञासा जाग उठती हैं। अनेक कविताओं में प्राकृतिक नजारे देखकर वह जिज्ञासी बना हैं। वह प्राकृतिक वस्तुओं से बाते करता हैं, प्राकृतिक घटनाओं से जानना चाहता हैं कि क्या परमसत्ता या ब्रम्ह से उनका रिश्ता या संबंध हैं। कवि " यमुना के प्रति " इस कविता में यमुना से पूछते हैं - हे सखे, तुम्हारी लहरों में अंधकार की तरह काले काले बाल अज्ञान रूप में लहराते हैं, वह

किसके हैं ? तथा उन लहरों में चंद्रमा जैसा मुख और चाँद की जैसा निर्मल रूप किसका झलकता है ? यथा --

" अलि अलकों के तरल तिमिर में
किसको लील लहर अज्ञात
जिसके गूढ मर्म में निश्चित्त
शशि सा मुख .. जोत्स्ना सी गात ? " २७

४.२.४ अपरा में विरह भावना स्थिति :

रहस्यवादी कवि का विरहानुभव एक महत्वपूर्ण स्थित्य भाव माना जाता हैं। अपरा में निराला की विरहानुभूति की भावना महादेवी वर्मा जैसी तिव्र या व्यापक नहीं। निराला में जिज्ञासा से आगे आस्था या मिलन स्थिति की जो आकांक्षा है वह अधिक तेज हैं। निराला के मन में उस असीम चेतना के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न होता हैं और उसमें लिन हो जाने की तमन्ना से व्याकुल हो उठता हैं -- तब वह विरह भावना उसके काव्य में समा जाती हैं -- हे करुणा के सागर, मुझे प्रेम मिलेंगा क्या ? क्या मैं इस हक के काबील नहीं हूँ ? मेरे सूने और दु:ख से जलते हुए रेगीस्थान की तरह जीवन में प्रेम का वृक्ष कभी हरा भी होगा क्या ?

" मुझे स्नेह क्या मिल न सकेगा ?
स्तब्ध दग्ध मेरे मरु का तरु
क्या करुणा कर, खिल न सकेंगा ? " २८

४.२.५ मिलन की स्थिति :

रहस्यावादी कवि की कविताओं ने या रचनाओ में विरह और मिलन की स्थितियाँ साथ साथ रहती हैं। निराला के अपरा में मिलन के चित्र प्रणय

से युक्त मादकता मय चित्रित हुये हैं, तो कही गूढात्मक रूप में स्थित है। अपरा में " जुही की कली ", " प्रेयसी ", आदि कविता इसके कुछ उदाहरण हैं।

४.२.६ प्रकृतिपरक रहस्यवाद :

कवि निराला को प्रकृति के उदात्त एवं विराट रूपों का आकर्षण रहा हैं। प्रकृति की परमसत्ता को ढूँढने का प्रयास उन्होंने अपने काव्य में किया है। " जुही की कली " मे आत्मा परमात्मा के मिलन दर्शाने का प्रयास हुआ हैं। "अणिमा " से चुनी हुई " तुम और मै " इस कविता में आत्मा परमात्मा के संबंध को प्रकट किया हैं। इस में परमात्मा के स्वरूप की प्रगाढ़ता तथा विराट - ताके आगे कवि स्वयंम को अंशिक तथा सूक्ष्म रूप मानते हैं। परमात्मा के रूपों को ऊँचा मानकर उसके आगे स्वयं नम्र होता हैं।

" तुम तुंग - हिमालय शृंग
और मैं चंचल गति सुर सरिता। " [२९]

आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यह पंच महाभुतों की स्थूल गती हैं। पृथ्वी जल तेज वायु आकाश यह उसकी सूक्ष्मगति है। इन पंचमहाभुतों का मानवीं विकास पर जितना असर होता हैं उतना ही प्रकृति के विकास पर होता हैं। जैसे उदाहरण के तौर पर २४/९/१९९५ के " अमुल सुरभि " में संगीत का असर प्राकृतिक वनस्पति तथा पेड पौधो के विकास पर अनुकुल रूप में होता हैं, यह प्रायोगिक घटना का चित्रण दिखाया था। उसमें उस प्रयोगदाता ने यह भी बताया था कि, मानवों की तरह वनस्पतियों में पंचमहाभुतों का असर होता हैं। अब यहाँ कि " संध्या सुंदरी " कविता में आकाश एक पदार्थ है जो अन्धकार रूप में परिवर्तित होकर धिरे धिरे पृथ्वी पर छा जाता हैं। और संध्या सुंदरी में इसकी विकास-वादी धारणा ऐसे पनपती हैं --

" हैं गूँज रहा सब कही --
× × ×
और क्या हैं ? कुछ नहीं। " [30]

४.२.७ योगपरक रहस्यवाद :

"जागो फिर एक बार" में यौगिक शाब्दावली का प्रयोग हुआ हैं। भाला-नल, तीनों गुण, तापजय, सहस्त्रार, सप्तावरण आदि के द्वारा योगशास्त्रीय सफल सामंजस्य प्रस्थापित हुआ हैं।

" सत् श्री अकाल
× × ×
कहाँ आसन हैं सहस्त्रार। " [31]

४.२.८ प्रेमपरक रहस्यवाद :

'अपरा' में विफल वासना इस कविता में प्रेमपरक रहस्यवाद का अंश मौजूद हैं। कवि विरहिनी के माध्यम से अपने हृदय पिंडा का वर्णन प्रियतम से निवेदन द्वारा करता हैं। जैसे आत्मा का परमात्मा से अनुरागात्मक निवेदन हो। आत्मा परमात्मा में समाकर मुक्ति पाना समस्त संघर्षों को भी मुक्ति हैं। प्रेमी ही प्रेमीका का सुहाग भी हैं और शृंगार भी। अगर परमात्मा में प्रेमी [आत्मा] का प्रणय निवेदन न सुनता हो तो क्या करे, क्यो न करुण प्रार्थना फूट पडे --

" बन्द तुम्हारा द्वार। मेरे सुहाग शृंगार।
यह द्वार यह खोलो। सुनो भी मेरी करुण पुकार ?" [32]

"भर देते हो", "उक्ति," "स्मृति", आदि कविताओं के प्रेमपरक रहस्याभिव्यक्ति हुई हैं। "तुम और मैं" एक बन्द में प्रेम परक रहस्य सरल अर्थ से प्रकट हुआ हैं।

" तुम वर्षों के बिने वियोग ,
मै हूँ पिछली पहचान। " [३३]

४.२.९ भक्तिपरक रहस्यवाद :

कवि निराला को जगत की चिन्ता हैं। प्रारंभ में वे तर्कयुक्त आस्था की गीतो और कविताओं की कल्पना में खो गये। कभी वे शारीरिक अक्षमता तो कभी वे मानसिक अस्वस्थता तथा रचनाओं के विफलता के कारण अनास्था प्रकट करते हैं। और प्रार्थना की व्यर्थता प्रकट करते हैं। इस चुनि हुई रचना के संकलन में प्रार्थनाये सर्वोदय के निमित्त ही हैं। इसमें आस्था और उत्थान की आशा के किरण सम्मिलित हैं।

" धुलि में तुम मुझे भर दो", " सुन्दर हे सुन्दर" भाव जो छलके पदो पर", "जन जन के जीवन के सुन्दर" आदि कविताओं में अलौकिक सत्ता के प्रति अदम्य आस्था प्रकट हैं। दे में करु वरण", "ध्वनि" में आशा मार्ग और साहस के भाव निर्देशित हैं।

अपरा की अनेक कविताओं, गीतों में भक्तिपरक रहस्य भावना दृष्टि - गोचर होती हैं। "अर्चना" गीत - १ में संसार का उध्दार करने की प्रार्थना सूर्य (देव) से की हैं। तो अर्चना ४ में भगवान से सहायता माँग रहे हैं --

" आओ हे निवर्परण। बिपन वार लो।
पडी भँवर बीच नाव। भूले हैं सभी दश्व ---। " [३४]

४.२.१० सारांश :

विश्व की पीठ पर भारत एक ऐसा देश हैं, जहाँ अनादि काल से धर्म भावना को लिए आ रहा हैं। धार्मिकता के साथ साथ जो पाखंड बढ रहा हैं,

उस पर भी कवि ने कविता का विषय बनाया हैं। आत्मा परमात्मा के संबंधो से ज्ञात होना कवि का ही नही भारतियों में उत्सुकता होती हैं। मगर यह सब बातें जब ठोंस तरीके से नहीं कही जा सकती तब रहस्यात्मक ढंग से कही जाती हैं। मानव निति मुल्यों के संस्कार तथा इस भारतीयों की संस्कृति बहुत पुरानी हैं। मगर खेद की बात यह हैं कि यहाँ पाखंड भी अधिक मात्रामें हैं। निराला की मानसिक विकास अवस्था बंगाल के संस्कार भूमि में हुई हैं। स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचारों का भारी प्रभाव आप पर रहा हैं। आपने प्रकृति के प्रत्येक वस्तुपक्ष को विस्मय और जिज्ञासा के भाव से देखा हैं। प्रकृति में चेतना का भाव इनके कविता के वस्तुपक्ष को रमणीयता प्रदान करता हैं। चिन्तन भी इनके रहस्यवाद का एक अंग हैं। जिज्ञासा, विरह, मिलन स्थिति का वर्णन हुआ हैं। निराला का अपरा संकलन जब पढा तब सन १९१९ से २३ तक सन १९३९ से ४३ तक तथा १९४५ से आगे की रचनाओं ने रहस्यात्मकता अधिक नजर आती हैं।

कहने लिखने की बात भी यह हैं कि निराला ने जिन जिन परिस्थितियों [प्रतिकुल से अनुकूल बनाकर] में जीवन बिताया हैं इस में वे रहस्यवादी न बनने तो वह उसके पहले ही व्यसनाधिन या भ्रमिष्ठ होते या उनके जीवन का संतुलन ही बिगड जा सकता था। परंतु यह महत्वपूर्ण बात हैं कि वे सहृदय और प्रभाववादी होने के कारण ही रहस्यवादी कवि बने।

-: प्रगतिवाद :-

४.३.१ प्रगतिवाद का सामान्य परिचय :

हिन्दी साहित्य का इतिहास हो या अन्य किसी भाषा का इतिहास हो इस में युगीन परिस्थियाँ बदलने पर तथा महत्वपूर्ण घटनायें घटित होने पर साहित्यिक विचारों में बदलाव आ जाता हैं, यह सामाजिक मानसिकता का ही परिणाम हैं। साहित्य में मानव मूल्यों के साथ साथ स्वाधिनता, विश्वबंधुत्वता का महत्व फ्रान्स की क्रांति का ही परिणाम हैं। कार्ल मार्क्स तथा ऐंजिल जैसे महान विचार को के जीवन दर्शन का प्रभाव सारे विश्व पर पड चुका था। सन १९३५ के आस पास हिन्दी साहित्य में नविन काव्यधारा दर्शन स्पष्टता से आगे आया। उसपर रूस के साम्यवाद का असर रहा हैं। इसी साल पेरिस में प्रगतिशील लेखक संघ " (Progressive Writters Association) की स्थापना हुई, जिसमें साहित्य के माध्यम से सामाजिक प्रगति को साहित्यकार का लक्ष्य घोषित किया। सन १९३६ में लखनऊ में " भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ " की स्थापना हुई जिसके प्रथम अधिवेशन का सभापतित्व मुंशी प्रेमचंद ने किया था। जो विचारधारा साहित्यिक क्षेत्र में "प्रगतिवाद" नाम से अभिहित हैं। वह राजनिति में साम्यवाद, सामाजिक क्षेत्र में समाजवाद और दर्शन में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद हैं। मुंशी प्रेमचंद का प्रगतिवाद के बारे यह मत लखनऊ के प्रथम अधिवेशन के दौरान प्रस्तुत हुआ हैं -- " हमारी कसौटी पर केवल वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधिनता के भाव हो, सौंदर्य का सार हो, जो सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, हम में गति संघर्ष और बेचैनी पैदा करें, सुलाये नहीं क्योंकि अब और जादा सोना मृत्यू का लक्षण हैं। " [३५] प्रगतिवादी साहित्यकारों की विचारधारा भी मार्क्स के उच्च विचारों से ही प्रभावित रही हैं। भारतीय प्रगतिवादी काव्य -

धारा का स्थित रूप डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी के "हिन्दी साहित्य के इतिहास " से उद्धृत इस तरह हैं -- " कुछ लोगों के अनुसार यह कविता व्यक्तिवादी कविता हैं। किन्तु इसका वर्गवाद मानव को एक समान करने के लिए ही तो हैं। वर्ग इसके द्वारा बनायें नहीं गये बल्कि वे पहले से ही उपस्थित थे और मनुष्यता का जो ग्रंथ सबसे अधिक दुखी और पिडित था उसी को इस धारा ने अपने काव्य का नायक माना। कहा जा सकता हैं कि करुणा की मुलभिति पर खड़े होकर इस कविता ने मानव मानव की सामाजिक समानता का आग्रह किया। इस समानता को लाने के लिए कवियों ने उन नंगे भूख और सर्वहारा प्राणियों के चित्र प्रस्तुत किये जिनको देखकर अकस्मा मानवता का हृदय पिघल सके।

इस कविता का दूसरा महत्वपूर्ण स्वर राजनीतिक हैं। राजनीति आज हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश पा गई हैं। हम घर से राष्ट्र तक की बृहत परिधि में आज की राजनीतिक समस्याओं से त्रस्त हैं और जुड़े हुए भी हैं। वैज्ञानिक अविष्कारों और साधनों ने दूर दूर के राष्ट्रो को बहुत निकट लाकर छोड दिया है। यही कारण हैं कि इस कविता का राजनितिक स्वर अन्तराष्ट्रीय हैं। विश्व की मनुष्यता जो पराधीनता और साम्राज्यशाही के चंगुल में फंसी हुई है, इस कविता की करुणा अर्जित करती है। इसीलिए इसमें भारतीयता, अभारतीयता का प्रश्न प्राय: नहीं उठाया जाता। तथापि यह आंदोलन भारतीय परिवेश की आवश्यकताओं का ही परिणाम हैं। " [३६] इस अवतरण से प्रगतिवाद का बहुत कुछ स्थित स्प नजर आता हैं, जिसके मूल में कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के विचारों की प्रेरणा हैं। मानव विकास में बाधा पहुँचानेवाली बात में एक तरफ वे धार्मिकता नष्ट करना चाहते हैं, जिससे उन्होंने मानवों की श्रध्दा को ठेस पहुँचायी हैं, दूसरी तरफ अहिंसा क्रांति नहीं चाहते हिंसात्मक क्रांति चाहते हैं। " प्रगतिवाद इस विचारणाओं के मूल में मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और प्रगतिवादी मनुष्यता का स्वर निहित हैं। इसलिए

ये सभी रचनाकार पूँजीवादी मनोवृत्ति का विरोध करते हैं। और मानव - विकास में बाधा पहुँचाने वाली शक्तियों के प्रति हिंसात्मक क्रांति का भी मार्ग ग्रहण करने को तत्पर रहते हैं। जीवन के विकास और समृध्दि के साथ आर्थिक प्रश्न आज अनिवार्य रूप से एक शर्त के रूप में जुड़े हुए हैं। इसलिए इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि साम्यवाद के विकास के लिए आर्थिक समानता का होना न केवल आवश्यक हैं बल्कि अनिवार्य भी हैं। " [३७] इस अवतरण से हमे प्रगतिवाद प्रवृत्ति की काव्यधारा में मार्क्स का प्रभाव, हिंसात्मक क्रांति, साम्य-वाद का गुणगान आदि लक्षण नजर आते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से रूढियों का विरोध, शोषितो का करुण गान, शोषको के प्रति घृणा और रोष, क्रांति की भावना, मार्क्स तथा रूस का गुणगान, मानवतावाद, नारी चित्रण सामाजिक जीवन का यथार्थ तथा समस्याओं का चित्रण, कला संबंधी नयी मान्यताएँ आदि मुख्य लक्षण इस काव्य-धारा में माने गये हैं।

४.३.२ निराला और प्रगतिवाद :

छायावाद की अतिशय भावुकता, कल्पनातिरेक, निराशा एवं पलायन प्रवृत्ति का विरोध सन१९३५ के आस पास हुआ। इस साल के बाद भी निरालाजी ने छायावादी कविताएँ लिखी मगर उसमें " जुही की कली ", "संध्या सुंदरी", "प्रेयसी", की तरह एक भी नहीं हैं। निराला स्वभाव से ही रूढि विरोधी एवं क्रान्तिकारी कवि थे। रूढियों का विरोध तथा नयी बात का प्रवर्तन उनकी प्रवृत्ति से अनुकुल पडता था। इसी कारण प्रगतिवादी चिन्तन में उन्होंने अपने मनोभावों की छाया सक्षमता से प्रकट करते हुये नजर आते हैं। उन्होने समान हित की दृष्टिसे "प्रगतिवाद" को अपनाया हैं। राष्ट्र विरों का गुणगान, राष्ट्र पतन के लिए दु:ख प्रकाश, समाज की अवनति के प्रति क्षोभ, कुरीतियों

पर प्रहार आदि इनके काव्य के विषय रहें हैं। उनका प्रगतिवाद न तो कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित हैं और ना ही उसके क्रान्ति के सिध्दातों से। वास्तव में उनका प्रगतिवाद मानव विकास में एक कदम आगे और आगे ले जाता हैं। डॉ. शिवकुमार मिश्र का मन इस प्रकार हैं -- " निराला की कविता प्रारंभ से ही सामाजिक विद्रोह और क्रान्ति की कविता थी। " [३८]

४.३.३ रुढियों के विरुध्द आंदोलन :

निराला बाल्य काल से ही क्रांतिकारी स्वभाव के रहे हैं। निराला ने अपनी शिक्षा नवें दर्जे में ही रोंकी, क्योंकि यह महान साहित्यिक कविन्द्र रविंद्र के जीवन से ली हुई एक क्रान्तिकारी प्रेरणा ही थी। जब कवि की पत्नी का देहांत हुआ और कवि के अनेक सज्जन मित्र उनके पास उनकी जन्म कुण्डली लेकर पहूँचते हैं, तब कवि उस कुण्डली को अपनी पुत्री को खेलने को देते हैं। इस कुण्डली से उनके दूसरे विवाह का शुभ योग नजर आता था। जब पुत्री सरोज [बाल्या अवस्था में] उस कुण्डली के टुकडे टुकडे कर देती हैं, जब निराला सिर्फ एक मंद मुस्कान अभिव्यक्त करते हैं, जैसे की ज्योतिष बातों को अन्धविश्वास ही समझते हैं।

पूर्व उत्तर प्रदेश में रहने वाले कान्यकुब्जो में चलनेवाली रहन सहन और पुरानी रीति नीति के विरुध्द कठोर वचन में टिका की हैं --

" ये काव्य कुण्ज कुल कुलागार,
खाकर पत्तल में करे छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद
इस विषय बेली में विष ही फल
यह दग्ध मरुस्थल नहीं सुजल " [३९]

दान में कवि भक्तो की अंधश्रध्दा पर तीखा प्रहार करते हैं, जो मानवता में बाधात्मक हैं और इस श्रध्दा पर खर्च करना आर्थिक विकास में बाधा हैं।

४.३.४ शोषितो का करुण गान :

सारे विश्व में जब मानव अधिकार हक की जानीव होने लगी तब शोषित लोंगो को उनपर होनेवाले सही अन्यायों का चित्रण करके उनको अधिकार एवं हक से जागृत करने का श्रेय इन विचारवादी लेखक एवं विद्वानों ने किया। शोषितो को जब इस साहित्य के द्वारा समज जायेंगा की उनपर यह अन्याय हो रहा हैं, तब ही वे इकठ्ठे होकर इस अन्याय के खिलाप आवाज उठायेंगे यह मार्क्स के विचारों में था। शोषितो के प्रति यदि साहित्यकार ने अगर करुन गान नही गाया तो सामान्य जनता उनके प्रति सहानुभुति, धिरज तथा साथ नहीं देती यह भी इन विचार वादियों का मत हैं। यह प्रगतिवाद का प्रतिपाद्य मत कवि अपने कविताओं में जान बुझकर नहीं किया वह अपने आप आया हैं। " भिक्षुक" तथा "विधवा" इन दो कविताओं का रचनाकाल १९२१ और १९२३ हैं। मगर इसमें यह करुन गान हैं वह मानवता का। मगर "तोडती पत्थर" में मजदूरनी का जो करुन चित्र है, वह बडा ही मार्मिक है। भरे दोपहरो में जिस वक्त बहुत गर्मि होती हैं तब वह पत्थर तोड रही हैं। मगर जहाँ वह पत्थर तोडती हैं वहाँ छायादार पेड भी नहीं है, मगर उसके आगे अलिशान महलो की कतार हैं, जिसकी छाया भी इसके भाग में नही है। सन१९२२ में लिखी " छत्रपति शिवाजी का पत्र " इस कविता में शुद्रो की स्थिति का भी करुण चित्र खिचा हैं --

" जारी रहेगा यदि। इसी तरह आपस में,
नीच जातियों के साथ। द्वन्द्व कलह वैमनस्य " [४०]

४.३.५ शोषकों के प्रति घृणा और क्षोभ :

"निराला " ने अपनी पैनी दृष्टि से समाज के सच्चे रुपको देखा और

परखा है। अपने जीवन में गरीबी को सहा हैं। उन्होंने "अपरा" में संकलित सहस्त्राब्दि में भारतीय समाज का सटीक विश्लेषन चित्रित किया हैं। उन्होंने कई कविताओं में वर्तमान सामाजिक शोषण का चित्र खींचते हुये यह दिखाया हैं कि संसार में विजयी कहलाने वाले लोग दूसरों का खून पीकर ही बडे बनते हैं और इस विचारधारा के संदर्भ में उन्होंने पूँजीपतियों को ललकारा हैं।

४.३.६ क्रान्ति की भावना :

समाज के शोषण का अन्त करने के लिए प्रगतिवादी कवि क्रान्ति का आव्हान करता हैं। निराला श्यामा के प्रलयकारी रूप के नृत्य का आव्हान करते हैं। --

" सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर, चाहिए कितने तुझको हार
कर मेघला मुंड मालाओं से बन मन अभिराम
एक बार बस और नाच तू श्यामा। " ४१

किसानों के प्रति गहरी सहानुभुति तो हैं तथा साथ ही साथ पूँजीपतियों को सार चूसने वाला बताकर उसके प्रति क्रान्ति की भावना जागृत करते हुए विप्लवकारी बादल को प्रतिक मानकर क्रान्ति के भावना की अभिव्यक्ति --

" जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर। तुझे बुलाता कृषक अधिर,
ऐ विप्लव के वीर। चूस लिया हैं उसका सार
हाड़ मात्र ही हैं आधार। ऐ जीवन के पारावार। " ४२

४.३.७ मार्क्स तथा रूस का गुणगान :

निराला की धारणा हैं कि समाज के समस्त कष्टों का मूल अर्थिक विषमता हैं और समाज के समस्त अनर्थों का एक ही उपचार हैं -- साम्यवाद।

इसी कारण साम्यवाद का गुणगान करना चाहता हैं --

" फिर पिता संग, जनता की सेवा का व्रत मैं लेता उमंग,
करता प्रचार, मंच पर खडा हैं। साम्यवाद इतना उदार। " ४३

४.३.८ मानवतावाद :

"अपरा " में मानवतावाद की अभिव्यक्ति सबल रूप में हुई हैं। रवीन्द्र, टॉलस्टॉय, गांधी आदि महानुभावों ने विश्व मानवता की वन्दना की और इसी प्रकार की मानवतावादी दृष्टि का जीवन दर्शन निराला में पाया गया हैं। "अपरा" में निराला समाज की विषमता से पीडित होकर कहता हैं --

" विप्लव - रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।
अट्टालिका नहीं है रें। आतंक - भवन " ४४

" तोडती पत्थर", "विधवा", "भिक्षुक","दलित जन पर करो करुना" आदि अन्य कविताओं मे मानवता का दर्शन होता हैं। यथा यह उदाहरण --

" ठहरों अटो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दु:ख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा। " ४५

४.३.९ वेदना और निराशा :

सामाजिक विषमता को देखकर कवि निराला का मन खिन्न हो जाता था। उनके मन में वेदना और निराशा के भाव भर जाते थे। ये भाव व्यक्ति-परक और समाजपरक होते हैं। अपरा में व्यक्तिपरक वेदना और निराशा का भाव अधिक रूप में अभिव्यक्त हुआ हैं। "मैं अकेला", "स्नेह निर्झर बह गया", मरण को जिसने वरा हैं" आदि कविताओं में वेदना और निराशा केभाव

प्रस्फुटित हुये हैं। --

" रेत जो तन रह गया है।

x x x x

स्नेह निर्झर बह गया है। [४६]

४.३.१० नारी चित्रण :

" " तुलसीदास" की रत्नावली वह "नारी" है जो भारतीय आदर्शों को ध्यान में रखकर अपने पति को सुधारने के हेतु कठोरवचन और व्यंग्योक्ति से अपने कर्तव्य को "साहस" से निभाती हैं। "विधवा" में भारत के विधवाओं की असहाय दीन दशा का रूप चित्रित हैं।

प्रगतिवादी कवि कभी कभी नारी को भोग की सामग्री मानता हैं और यथार्थवादी वर्णन के नाम पर उसके मांसल चित्रण में रमता हैं। परंतु निराला में ऐसा चित्रण अंशिक रूप में "जुही की कली" में गोरे गोल कपोल मसल देने की बात कहता हैं। तो यह पत्थर तोडने वाले मजदूरनी का कुछ अंश तक मांसल वर्णन --

" श्याम तन, भर बँधा यौवन " [४७]

४.३.११ सामाजिक जीवन का यथार्थ वर्णन :

वनबेला में पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति तीखा व्यंग्य हैं तथा पत्रकारों तथा नकली समाजवादियों की अच्छि खबर ली गई हैं। द्रष्टव्य यह हैं कि सन १९३५ में काँग्रेस के अन्दर समाजवादी दल की स्थापना हुई थी और भारत की राजनीति में समाजवाद का हल्ला सुनाई पडा था। नागरिक जीवन में कृत्रिम

जीवन के प्रति भी तीखा व्यंग्य यथार्थता का सूचक हैं क्योंकि तत्कालीन शासन की व्यावहारिकता चंगुल में फँसी थी। बढ़ती हुई भौतिकता का वर्णन और उसको सचेत करने का प्रयत्न किया है। विधवाओं की यथार्थ स्थिति और मजदूरों की भी यथार्थ स्थिति निराला के कविता के विषय रहे। "देवी सरस्वती " में ग्रामीण जीवन का वर्णन यथार्थ की कसौटी पर उतरता हैं। वह सरस्वती का निवास गृह उस ग्राम जीवन को बताता हैं जैसे यहाँ --

" डाले बीज चने के, जव के और मटर के,
गेहूँ के, अलसी - राई - सरसों के, कर से,
x x x x
सुख के आँसू दु:खी किसानो की जाया के
भर आये आँखो में खेती की माया से। " ४८

इसी कविता में सभी ऋतुओं का वर्णन कवि निराला ने सामाजिक जीवन के यथार्थ को दर्शाने के लिए किया हैं, परंतु यह प्रवृत्ति प्रयोग वाद से प्रभावित रही है।

४.३.१२ सामाजिक समस्याओं का चित्रण :

"अपरा" में "जागो फिर एक बार" १/२, "जागा दिशा ज्ञान", "छत्रपति शिवाजी का पत्र" आदि कविताओं में देश की पारतंत्रता को समस्या का रूप समझकर उद्बोधन नव निर्माण और देशभक्ति का चित्रण हुआ हैं।

" पशु नहीं, वीर तुम, समर शूर क्रूर नहीं ;
x x x x x
पूरा यह विश्वभार -" जागो फिर एक बार।" ४९

परतंत्रता को हटाने के लिए कवि भारतवासियों को ललकारते हैं। --

" जागो फिर एक बार,
x x x
रहते प्राण रे अजान। " [५०]

हमारी सामाजिक समस्या का यह भी एक ---

" व्यक्तिगत भेद ने छीन ली हमारी शक्ति। " [५१]

आपसी कलह की समस्या --

" जितनी विरोधी शक्तियों से
हम लड रहे हैं आपस में,
सच मानो, खर्च हैं यह
शक्तियों का व्यर्थ हो। " [५२]

इन समस्याओं के साथ कृषक, मजदूर, धर्म , जाती व्यवस्था, राजनीतिक, साहित्यिक आदि समस्याओं को अपरा में अभिव्यक्ति मिली हैं।

४.३.१३ कला संबंधी मान्यताएँ :

" अपरा " जो प्रगतिवादी प्रवृत्तियों से प्रभावित कविताएँ हैं उनमें भाषा भावानुसारिनी हैं। छन्द तथा अलंकारो के प्रचुर प्रयोग तथा छायावादी शैली के अनुसार कोमलकांत पदावली का प्रयोग हुआ हैं। रूपक, उपमान, प्रतिक, तथा लोकोक्तियाँ का प्रयोग भी हुआ हैं। कुछ कविताओं में कर्कशता, खुरदरापन, सरसता जरूर महसुस होती हैं।

४.३.१४ सारांश :

प्रगतिवाद के विवेचन से हम सरलता पूर्वक कह सकते हैं कि निराला प्रणीत

काव्यसंकलन " अपरा " में प्रगतिवाद की समस्त विशेषताओं के दर्शन होते हैं।

अपरा में समाज का यथार्थ चित्रण हैं ही साथ ही साथ सामान्यजन, किसान, मज्दूर, नारी सामाजिक धार्मिक राजनीतिक तथा साहित्यिक समस्या के उत्पन्न कहानी की कवितायें संकलित हैं। सरल और मार्मिक शैली में उनकी कवितायें भावानुसारीनी होने से और भी सरस हो गयी हैं। इस धारा की कवितायें उन्होंने छायावादी काव्यधारा युग प्रवृत्ति के युग में लिखने से छायावादी कविता की कला गत विशेषतायें भी मौजूद हैं।

" अपरा " में प्रगतिवादी कवियों के अतिश्वरवाद के चित्रण का यहाँ अभाव हैं। तथा निराला की कवितायें क्रांतिकारी हैं, प्रगतिशील हैं परंतु प्रगतिवादी कविताओं में धुलमिल जाती हैं, इसिकारण उसे प्रगतिवादी कहने में कोई दिक्कत नहीं। फिर भी हम निराला को प्रगतिवाद के आद्य कवि कहेंगे तो कोई अचरज की बात नहीं। यह तो उनके काव्य का आयना ही हैं।

-: प्रकृति वर्णन :-

४.४.१ प्रकृति वर्णन की परंपरा :

हिन्दी में प्रकृति विषयक स्वतंत्र काव्य का प्राय: अभाव ही हैं। प्राचीनतम् काल से प्रकृति मानव मन को अपनी ओर आकृष्ट करती आई हैं, इसके विभिन्न रूप कवि मन से साहित्य में उतरे हैं। हिन्दी कविता में सर्वप्रथम द्विवेदी युग के कवियों ने प्रकृति के स्वतंत्र अस्तित्व को स्विकार किया। कभी इस युग के कवियों की दृष्टि कश्मिर सुषमा पर गई तो कभी ग्रामों के सौंदर्य पर। यद्यपि उनका दृष्टिकोन आदर्शवादी होने के कारण प्रकृति चित्रण विशेष सफल नहीं रहा, फिर भी प्रकृति की ओर उन्मुख होने का उनका प्रयास महत्वपूर्ण माना जाता हैं। छायावादी युग के कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति चित्रण को विशेष रूप से अपनाया। इस युग में प्रकृति के सुंदर, संश्लिष्ट चित्र उपस्थित हुये। जड़ प्रकृति को चेतन और स्पन्दनशील बनाने का श्रेय छायावादीयों को जाता हैं। पन्त का प्रकृति चित्रण हिन्दी साहित्य में अनुठा हैं।

४.४.२ "निराला और प्रकृति वर्णन :

निराला ने प्रकृति के मनोरम चित्र खिंचे हैं। निराला बंगाल और अवध के ग्रामो में काफी समय रहे, वहाँ वे प्राकृतिक सुषमा की असिम अमिर चेतना पाते हैं। उनका ऋतू वर्णन, प्रतीक विधान एवं अलंकरणात्मक प्रकृति वर्णन सुन्दर हैं। निराला का सबसे प्रिय विषय बादल और प्रिय ऋतु वर्षा हैं। उनके प्रकृति वर्णन के बारे में रामरतन भटनागर का एक मत " प्रकृति के व्यापक, विस्तृत, गंभीर रूपों का चित्रण भी निराला की सिध्द लेखनीने किया हैं। जहाँ पन्त हाथी दाँत पर मीनाकारी कहते हैं, वहाँ उनके विपरीत निराला रंग में कूंची डूबो कर महान चित्रकार निकोलस रोरिक की तरह दोचार सीधे टेढे स्पर्शों में ही प्रकृति

के अनन्त स्रोतों और इन स्रों की अनंत परभूमि का आभास देते हैं। " [५३]

निराला के काव्य में बिखरे हुये पुष्पों, प्रपातों, तरंगो, संध्या एवं प्रभात के रंगीन एवं विभोर कर देने वाले वर्णन यह सिध्द करते हैं -- प्रकृति के विभिन्न स्रों को देखकर उनका मन मुग्ध हो जाता हैं। और यही कारण हैं कि प्रकृति के विभिन्न चित्रण में वे अपने भावनाओं को पिरों कर प्रकृति के इतने सुन्दर एवं अंतस्पर्शी चित्रों को उभार सके हैं। आगे देखते हैं, अनेक स्रों में चित्रित प्रकृति वर्णन " अपरा " काव्य संकलन में इसतरह हैं।

9.4.3 आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण :

कवि निराला वसन्त ऋतु के वर्णन में प्रकृति पर चैतन्यारोपन करके प्रकृति का आलम्बन रूप का सजीव वर्णन "अपरा " में मिलता हैं। उदा. --

" किसलय वसना नव वय लतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु पतिका,
मधुप - वृन्द बन्दी
पिक - स्वर नभसरसाया। " [५४]

यहाँ जागरण की स्थिति की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति का तदनुकूल वातावरण भावों में उत्कृष्टता उत्पन्न करता हैं ---

" अस्ताचल ढले रवि,
x x x x
x x x x
जागो फिर एक बार। " [५५]

निराला ने ऐसे वर्णन करते समय प्रकृति में पशु, एवं पक्षियों की स्वाभाविक क्रिडा - कलायों का भी वर्णन किया हैं। प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों

रस आलम्बन रस में मिलते हैं। जैसे एक ओर किसलय आवृत्त कलियों की कोमलता के वर्णन हैं तो दूसरी ओर बादल राग की कठोरता हैं। "बनबेला", "जलाशय के किनारे कुहरी" आदि कविताओं में प्रकृति के आलम्बन रस में सृष्टि की हैं।

४.४.४ उद्दीपन रस में प्रकृति चित्रण :

प्रकृति का मोहक रस जब निराला की कोमल भावनाओं को जगा देता हैं, तब वह विभोर होकर प्रकृति की छटा का वर्णन करते हैं। संध्या समय के वातावरण को देखकर कवि निराला की विरह वेदना जागृत हो उठती हैं और बाद में प्रतिभा इन उद्दीपन रस को उसकी सहायता से खिचते हैं --

" अर्धरात्री की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से,
आप निकस पडता तब एक विहाग। " [५६]

वसन्त काल में प्रिया का प्रिय से समागम हुआ था। अब जब वसन्त बीत गया, तब प्रिया का उन्माद हटा और मिलन काल की सारी सुखद स्मृतियाँ उसे बैचेन कर गयी। सुरभित वायु के एक ही झोकेके सारी सुखद, दु:खद दोनेा प्रकार की स्मृतियों को जगाकर विरह को और भी गहराई में झोंक दिया, इसलिए यहाँ प्रकृति का उद्दीपन रस में जो वर्णन हुआ हैं वह वसन्त ऋतु की मार्मिक अभिव्यक्ति का उदाहरण हैं --

" सुमन भर न लिए
× × × ×
× × × × ×
नहीं निर्दय क्या ? " [५७]

"जुही की कली", "वसन्त आया", " जागो फिर एक बार", "प्रेयसी", "राम की शक्ति पूजा", आदि अनेक कविताओं में भावनाओं को उद्दीप्त करनेवाले

प्रकृति दृश्यों का वर्णन किया गया हैं।

"देवी सरस्वती" में प्राचीन पध्दति के षटऋतु वर्णन शैली को अपनाया हैं। हेमंत ऋतू का यह वर्णन प्रस्तुत --

" कुन्दो के विकास के शुभ्र हास पर उतरी
ओस - बिन्दुओं से शीतल हेमन्त की परी ----।" ५८

४.४.५ मानवीकरण के रूप में प्रकृति चित्रण :

प्रकृति में मानव रूप, मानव गुण, मानव क्रिया कलापों एवं मानव भावनाओं का आरोप करके प्रकृति को सचेतन बनाया जाता हैं। और यही मानवीकरण हैं। निराला की प्रकृति प्राय: मानवी रही हैं। उन्होने "यमुना के प्रति", "संध्या सुंदरी", "जुही की कली", आदि कविताओं में सूक्ष्म रेखाओं द्वारा प्रकृति का मानवीकरण किया हैं। इसमें कुछ अध्ययन सुलभ विधायें मिलती हैं। जिससे इसकी जानकारी और भी साफसूथरी और आसान होती हैं।

४.४.६ अप्रस्तुत विधान के लिए प्रकृति चित्रण :

वर्ण्य वस्तु की सौंदर्य को और भी सुंदर एवं हरयगम बनाने के लिए कवि जन उपमानो, रूपको, उत्प्रेक्षाओं का विधान करते हैं। इसके लिए कवि प्रकृति के पदार्थों को उपमानों के रूप में ग्रहण करते हैं। इनका सहारा लेकर अपनी भावनाओं अभिव्यक्त करने का प्रयास किया हैं।

" गहन हैं यह अन्धकारा :

इस गगन में नहीं दिनकर
नही शशाधर, नहीं तारा " ५९

४.४.७ वातावरण चित्रण के लिए प्रकृति वर्णन :

"निराला" ने "अपरा" में कई स्थानों पर भावनाओं के अनुसार प्रकृति के वातावरण चित्रण का सफल प्रयास किया हैं --

" प्रशमित हैं वातावरण, नमित - मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्ता - पल पीछे, वानर - वीर सकल,

निशि हुई विगत नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी रघुनन्दन के दृग महिमा - ज्योति - हिरण। " [६०]

४.४.८ उपदेशिका रूप में प्रकृति चित्रण :

"अपरा"में इस रूप में प्रकृति वर्णन अधिक नहीं मिलता। परंतु इस तरह का एक सुन्दर उदाहरण जिसमें प्रेम की एक पवित्र भाव हैं, उसके लिए वर्ण - जाति की बाधा नहीं होनी चाहिए जैसे भिन्न रूप के रात दिन तथा पृथ्वी और जल से यह बात सिखनी चाहिए --

" किन्तु दिन रात का जल और पृथ्वी का
भिन्न सौंदर्य सा बन्धन स्वर्गिय है। " [६१]

४.४.९ दूति के रूप में प्रकृति वर्णन :

प्रेयसी में बादल के द्वारा संदेश प्राप्त हुआ हैं। यथा --

" सूर्य हीरक धरा प्रकृति निलाम्बरा,
सन्देश वाहक बलाहक विदेश के। " [६२]

४.४.१० प्रतिक रूप में प्रकृति वर्णन :

"अपरा" काव्य संकलन में प्रकृति को प्रतिक रूप में चित्रित किया हैं। "तुलसीदास" में प्रतीक विधान अधिक पाये जाते हैं। सजग कर देनेवाली सौन्दर्ययुक्त शारीर - यष्टि को "चपला" उसकी ऐश्वर्य संपन्नता को "कमला" और बुंध्दि और वैभव को "अमला" कहा हैं --

" भयपल ध्वनि की चमकी चपला,
बल की महिमा बोली अबला
जागी जलपर कमला, अमला मति डोली --।" [६३]

तथा आकाश के निली सारी का चित्रण "अंचल" का प्रतिक --

आती हो तुम सजी मण्डलाकार ? " [६४]

४.४.११ ऋतु चित्रण :

ऋतु चित्रण के अनेक अंग अनेक कविताओं में जगह जगह पर पाये जाते हैं। परंतु "देवी सरस्वति" में नविन शैली पर षट्ऋतु वर्णन दृष्टव्य हैं।

४.४.१२ दार्शनिक वातावरण के लिए प्रकृति चित्रण :

जिज्ञासा कुतुहल के भाव निराला के मन में "दर्शन" भाव की प्रेरणा निर्माण करते हैं। तरंगो को देखकर कवि निराला ने कौतुहल प्रकट किया हैं। --

" एक रागीनी में अपना स्वर मिलाकर
गाती हो ये कैसे गीत उदार ? " [६५]

कवि निराला की "अपरा" में जिज्ञासा भावना सफलता के साथ अभिव्यक्त

हुई हैं। यह जिज्ञासा बालक जिज्ञासा न होकर एक दार्शनिक की जिज्ञासा हैं। पिता पर्वत के पूत शीलाखण्ड प्रपात की राह रोकते हैं। जब प्रपात उन्हे पहचान लेता हैं, तो उसके ओठो पर एक मुसकान फूट पडती हैं। यही जीवन का रहस्य हैं, प्रत्येक रोज हमारा आत्मीय होता हैं। --

" बस अजान की ओर इशारा करके चल देते हो
भर जाते हो उसके बन्तर में तुम अपनी ताना। " [६६]

४.४.१३ प्रकृति का यथातथ्य वर्णन :

" अपरा " में इसका एक सुन्दर उदाहरण मिलता हैं --

" सखि वसन्त आया। भरा हर्ष बन के मन
नवोत्कर्ष छाया। किसलय वसना नव वय पतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु पतिका
मधुप - वृन्द बन्दी -। पिक स्वर नफ सरसाया। " [६७]

४.४.१४ अलंकरण के हेतु प्रकृति चित्रण :

" अपरा " संकलन में प्रकृति से नवीन उपमानों का चयन किया, दूसरे परंपरा क्रम उपमानों का भी प्रयोग नवीन ढंग से किया। प्रकृति के उपमानगत प्रयोग में जहाँ रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि सदृश्यमूलक अलंकारो की योजना हुई हैं।

४.४.१५ सारांश :

निराला ने प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों रूपों का चित्रण किया हैं। प्रकृति पर चेतना का आरोप किया गया हैं। प्रकृति में भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा प्रकृति को मानवीकरण, रहस्यात्मकता नजर आती हैं। निराला के प्रकृति

वर्णन में उदासी या निराशा का चित्रण बहुत ही कम नजर आता हैं। " बादल " उनका सुंदर विषय बन पडा हैं। उषा, संध्या रात्री के चित्रण के साथ प्रपात, फूल, जलद आदि के साथ सभी ऋतुओं के चित्रण में विशेषता आयी हैं। सच तो यह हैं कि " अपरा " में निराला द्वारा प्रकृति का विशाद एवं व्यापक चित्रण मिलता हैं जिस के सब रूप उपलब्ध होते हैं जो आधुनिक युग पाये जाते हैं।

" अपरा " की नारी

४.५.१ प्रस्तावना :

नारी भावना या नारी चित्रण संबंधी हम यदि विचार करें तो नारी के स्मों की चर्चा आवश्यक हैं। संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के नवरत्नों में कालीदास धन्यन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर , वराहमिहिर तथा वररुचि का नाम उसमें मिलाया जाता हैं। वराहमिहीर कालीदास तथा अमर-सिंह के ग्रंथो को आधार पर, उन्होंने तत्कालीन समाज में स्त्रियो की दशा का वर्णन करते हुये सबसे पहले " अमरकोष " जिसमें अनेक बाहरी भेदों के साथ स्त्रियों की उनतीस कोटियाँ स्थापित की हैं। " वैसे नारी के समस्त स्मों का विकास एक लम्बी यात्रा हैं जिसमें देश, धर्म, संस्कृति के कारण अनेक बदल भी हैं। जहाँ तक भारतीय संस्कृति का सवाल हैं इसमें जाति धर्म के अनुसार कुछ अलग अलग संस्कृतियाँ हैं। फिर भी आज कल के नारी के एक स्थित स्म हैं। इसका विचार इस " अपरा " संकलन के समस्त कविताओं के तत्कालीन धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक परिस्थियों के प्रभाव का ही परिणाम होगा।

कन्या, पत्नी, माता, बहन और साधारण नारी जिसमें भी अनेक प्रकार। विभिन्न देशों की विभिन्न जातीयों की विभिन्न संस्कृतियों की धारणायें विपरित हैं, जिसका अध्ययन करना कुछ आवश्यक नहीं हैं। फिर भी निराला के समकालीन संस्कृति में नारी भावना का विचार करना आवश्यक हैं। निराला के रचनाकाल के समय नारी के प्रति दृष्टिकोण आदिकाल, भक्तिकाल या मध्यकाल से बदला हुआ नजर आता हैं। नारी न - हीन समझी गयी न त्याज्य। भारन्तेंदु युग में उसके उद्धार की चर्चा की गई। तो छायावादी युग में उसके विभिन्न स्मों को दिखाया गया तो प्रगतिवाद और

प्रयोगवाद युग में भोग की वस्तु रही। वर्तमान कविभी उसके प्रति प्राय: भोगवादी दृष्टिकोण रखते हैं। फिर भी " निराला " के " अपरा " काव्य संकलन की रचनाकाल में व्याप्त नारी रूप एवं भावना के चित्रण अनेक रूपों में विद्यमान हैं। प्रेयसी, माता, पत्नी, पुत्री तथा उसके संबंधी और दृष्टिकोण से चित्रित किया हैं, उसका विस्तृत अध्ययन इस तरह --

४.५.२ प्रेयसी रूप में नारी :

निराला के " अपरा " काव्य संकलन में नारी का प्रेयसी रूप में दर्शन हुआ हैं। जो रीति काल के वर्णन से साम्य रखता हैं। " जुही की कली " की नायिका का यह प्रेयसी रूप - मानवीकरण शैली में

" विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी
स्नेह - स्वप्न - मग्न - अमल कोमल - तनु तरुणी,
जुही की कली
x x x
नायक ने चूमें कपोल
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल। " [६८]

४.५.३ माता के रूप में नारी :

नारी का सूक्ष्म प्रतीक शक्ति हैं। दुर्गा हमारी संस्कृति में एक ऐसी विरांगणा हो चुकी हैं, जिसकी महत्ता अनेक कवियों ने रचित की हैं। काली, चण्डी, पार्वती, श्यामा, सीता आदि इसीके रूप हैं जो उसीसे निर्माण मानतें हैं। आम संस्कृतियों में माता का स्थान सर्वोच्च रहा हैं, उसकी आराधना, पूजा या आदर भावना परम्परा से जारी हैं।

" रूद्र रूपसे सब डरते है, । देख - देख भरते हैं आह
मृत्यु रूपिणी मुक्त कुन्तला । माँ की नहीं किसी को चाह ।
उष्णधार उद्गार रुधिर का । करती हैं जो बारम्बार
भीम भुजा की, बीन छीनती, । वह जंगी नंगी तलवार
मृत्यू - स्वरूपे माँ, है तू ही । सत्य - स्वरूपा, सत्याधार
काली सुख - वनमाली तेरी । माया छाया का संसार ।
अये - कालिके, माँ करालिके, । शीघ्र मर्म का कर उच्छेद,
इस शरीर का प्रेम भाव, यह सुख - सपना, माया करभेद ।" [६९]

"भारती वन्दना", "राम की शक्ति पुजा", " शरन में जन -जननी " मातृ वन्दना", "आवाहन", "छत्रपति शिवाजी का पत्र", आदि कविताओं में माता रूप नारी एक आदर्श भावना को उद्घाटित किया हैं।

४.५.४ पत्नी के रूप में नारी :

पति - पत्नी के जीवन दु:खमय तब बनते हैं जब व्यक्तित्व में असमानता, अभाव, असमझ तथा दोनों में से एक का अंत, साथ ही साथ अनेक कारण भी हो सकते हैं। भारतीय संस्कृति में कैसे भी पती के साथ पत्नी का बँधा रहना अनिवार्य रहता आया हैं। भारतीय "पत्नी" प्रेमिका, सलाहकारिणी, गृहिणी सन्तानोत्पादिका इत्यादि रूपों में नजर आती हैं। स्मृति में कवि अपनी पत्नी की वेदना सताती हैं। उसके कार्य कलापों कवि दिगन्तव्यापी रूपों में देखता हैं और उससे प्रेरणा भी ग्रहण करता हैं। " पत्नी " के इस रूप का चित्रण निराला द्वारा इस तरह --

" पवन में छिपकर तुम प्रतिपल,
पल्लवो में भर मृदुल हिलोर,
चूम कलियों के भुद्रित दल

पत्र - छिद्रो में गा निशि - भोर

विश्व के अन्तस्तल में चाह,
जगा देती हो तडित - प्रवाह।" ८२ 7०

" जागृति में सुप्ति थी " में पत्नी के प्रेमिका रूप का उद्घाटन करती हैं। " विधवा " में द्विजवर्गीय पत्नी का भावमय चित्र प्रस्तुत किया गया हैं, जिसका जीवन पतिहिना होने से अरण्य बन गया हैं। " मरण दृश्य " में पत्नी का अविस्मरणीय रूप चित्रित किया हैं। " राम की शक्ति पूजा " में पत्नी के मुक्ति की कल्पना ही मुख्य हैं। " सहस्त्राब्दी " में पत्नी के अतुलनीय त्याग का करूण चित्र प्राप्त होता हैं। उसमें मण्डन मिश्र की पत्नी उभाय भारतीने न्याय पीठपर बैठकर शास्त्रार्थ में अपने पति को पराजित घोषित किया। " तुलसीदास " में तुलसीदास की पत्नी रत्नावली उस समय क्रुध्द होकर कटुक्तियाँ का सहारा लेती हैं जब तुलसीदास अधिरता से रत्नावली के पिछे ससुराल आता हैं। उस समय नारी के विद्रोहात्मक रूप का उदात्त स्वरूप चित्रित किया हैं। इस तरह नारी के पत्नी रूप को सफलता पूर्वक निराला ने " अपरा " में चित्रित किया हैं।

४.५.५ पुत्री रूप में नारी :

"अपरा" में " सरोज स्मृति" एक ऐसी सुंदर कविता हैं जिसमें स्वंय कवि निराला ने अपने पुत्री का चित्रण किया हैं। भारतीय संस्कृति में पिता पुत्री का संबंध उतनाही पवित्र हैं जितना भाई बहन का हैं। इसमें अपने पुत्री का विस्मृत वर्णन एवं उसकी उन्नीस बरस आयु की जीवन कहानी को यथातथ्य चित्रित किया जो करूण रस युक्त हैं। आधुनिक काव्य में ऐसी श्रेष्ठतम रचना अन्य नहीं हैं जो पिताद्वारा पुत्री के विरह में रची हैं।

४.५.६ नारी के प्रति चित्रण में सौंदर्य एवं सहानुभुति :

"जुही की कली " और " संध्या सुंदरी" में मानवीकरण शैली में नारी का सौंदर्य चित्रण किया हैं। सौंदर्य चित्रण के अधिक उदाहरण "अपरा" नही मिलते ---

" अलसता की सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बाँटे,
छाँट-सी अम्बर पथ से चली। " ७१

"विधवा" में नारी के प्रति सहानुभुति का यह करुण चित्र --

" उस करुणा की सरिता के मलिन पुलिन पर,
लघु टूटी हुई कुटी का, मौन बढाकर
अति छिन्न हुए भीगे अंचल में मन को
दु:ख रुखे-सुखे अधर त्रस्त चितवन को
वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर
रोती हैं अस्फुट स्वर में। " ७२

४.५.७ सारांश :

"अपरा" की कई कविताओं में नारी के विविध रुपों का चित्रण मिलता हैं। वह प्रेयसी भी हैं प्रेरणा शक्ति भी हैं, पत्नी भी हैं, सलाहकारीनी भी हैं, माता भी हैं, पुत्री भी हैं। कभी उसके सौंदर्य के चित्रण हैं तो कभी उसके भावों के चित्रण। उसकी महत्ता का गुणगान एवं श्रध्दा भी हैं। "अपरा" में नारी के प्रति उदात्तता, दिव्य दृष्टि, सामान्य दृष्टि और असिम गहरी सहानुभूति की भावना के चित्रण मिलते हैं।

** गीतितत्व **

४.६.१ प्रस्तावना :

संस्कृत साहित्यशास्त्र में काव्य के दृश्य और श्राव्य दो भेद मानकर श्रव्य काव्य को महाकाव्य और खण्डकाव्य दो भेदों में विभक्त किया गया हैं। दूसरे पद्यों से छंदोबध्द रचना को मुक्तक कहते हैं। वस्तुत: गीतिकाव्य और मुक्तक काव्य में भारी अंतर हैं। गीतिकाव्य अनुभूति की अन्विति उपस्थित करता हैं, इसी अवस्था में उसके पद्य में अपने ही अन्यपद्यों की आकांक्षा अवश्य रखते हैं। मुक्तक छंद की इकाई मात्र उपस्थित करते हैं। संस्कृत साहित्य में शास्त्रकारों ने इस प्रकार गीतिकाव्य नाम का कोई भेद नहीं माना।

ग्रीकों ने काव्य के दो भेदों को माना हैं – गीति काव्य Melic orlyric तथा सामुहिक काव्य choric । सामुहिक काव्य गेय था और अनेक लोक मिलकर वाद्ययंत्रो की सहायता से किसी तिव्र सामुहिक भावनाओं को अभिव्यक्त करते थें। गीतिकाव्य को लिरिक इसिलिए कहते थे कि उसे "लायर" नामक वादय यंत्र कीसहायता अपेक्षित थी, उसके द्वारा वैयक्तिक अनुभूति के उद्रेक का प्रयास किया जाता था। गीतिकाव्य की अंतीम अवस्था में संगीत के शास्त्रीय विधान का मोह एकदम छुट जाता हैं, शब्दों में अपना संगीततत्व हैं और शब्दों के पारस्पारिक संघटन और मेलद्वारा उनके अन्तर्निहित संगीत समन्वय अनुभुति की अभिव्यंजना के साथ होता हैं। मन ही मन में पढने समय भी संगीतात्मकता हैं, जिसके द्वारा विशिष्ट प्रभाव की योजना होती हैं। और इसमें तीव्रता आती हैं। संगीत वहाँ बाह्य आरोप नहीं अन्तर्निहित प्रवाह हैं यह गीति काव्य की चरम परिणाती हैं। सजीव भाषा में व्यक्ति के अन्तरिक भावों की समग्र अभिव्यंजना संगीतात्मकता के आग्रह के साथ जिसमें आती है, वह गीति काव्य हैं।" [७३]

आधुनिक युग के गीतो में सौंदर्य के प्रति आकर्षण, प्रणय निवेदन अतृप्ता

आकांक्षा, वेदना की व्यंजना, जीवन के अवसाद-विशाद एवं रहस्यात्मक उन्मेष हैं। केवल शृंगार और प्रेम, विरह और मिलन से ही परिपूर्ण नहीं बल्कि देश प्रेम, मानवता प्रसार मानवीय दृष्टिकोन में क्रांति के गीत आज के कवि गाते हैं। डॉ. रामखेलावन पाण्डेय के अनुसार गीतिकाव्य की तत्वों की ओर इस प्रकार प्रकाश डला हैं ---" गीति काव्य के उद्भव और विकास के संक्षिप्त इतिहास द्वारा गीति काव्य के इन तत्वों की ओर हमारा ध्यान जाता हैं --

१. संगीतात्मकता
२. जीवन के एक पहलू का कलाकार के मनपर पडनेवाले कल्पना गत प्रभाव का सौंदर्य और कलापूर्ण चित्रण।
३. रागात्मक अनुभूति की इकाई और समत्व।
४. अन्तर्दर्शन और आत्म-निष्ठता, सुख-दु:ख, राग-द्वेष, आशा-निराशा जिसके आधार हैं।
५. लयात्मक अनुभूति।
६. समाहित प्रभाव। " [७४]

डॉ. रामखेलावन पाण्डेयजी के इन गीति तत्वों का **आधार** लेकर मैं "अपरा" संकलन में स्थित गीति तत्वों को खोजने का प्रयास करने जा रहा हूँ। अध्ययन सुलभता के कारण वैयक्तिकता या आत्माभिव्यक्ति, संगीतात्मकता, भाव-प्रवणता तथा संक्षिप्तता इन तत्वों का अध्ययन तथा शोधयन इस प्रकार।

४.६.२ वैयक्तिकता या आत्माभिव्यक्ति :

गीति काव्य में आत्माभिव्यक्ति की दो पध्दतियाँ अभिव्यक्त हो गई हैं जो प्रत्यक्ष और परोक्ष हैं। निराला के गीति कला में दोना प्रकार की पध्दतियों को पाया जाता हैं। उदाहरण के लिए " सरोज स्मृति " में निरालाने अपने

गहण विषाद को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त किया हैं और " हिन्दी सुमनों के प्रति पत्र" में उन्होंने अपने अपेक्षित जीवन की कथा को कहा हैं। इस प्रकार "वनबेला", "स्वप्न स्मृति" आदि गीतो में अपनी कसक परोक्ष विधी से प्रस्तुत की हैं। मुख्यत: "अपरा" मुं जादातर परोक्ष विधी काही अधिक अवलम्ब पाया जाता हैं।

४.६.३ संगीतात्मकता :

निराला संगीत शास्त्र में निष्णात थे और उन्होंने संगीत को गीति-काव्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना हैं। डॉ. रामखेलावन पाण्डेय के गीतिकाव्य ग्रंथ में " वसन्त आया " गीत में दादरा के ७ मात्रा के ताल पडनेकी चर्चा की गयी हैं।

" सखी वसन्त आया

पिक - स्वर नभ सरसाया। " [७५]

कुछ अन्य उदाहरण जिन में संगीतात्मकता पायी जाती हैं --

" नूपुर के स्वर मन्द रहे,

बजे छन्द जो बन्द रहे। " [७६]

तथा,

" पता कहाँ अब वह वंशीवट ?
कहाँ आज वह वृन्दा धाम ?" [७७]

अनेक कविताओं में शब्दो में अपना संगीत तत्व हैं और शब्दो के पारस्पारिक संबध संघटन और मेलद्वारा उनमें अंतर्निहित संगीत समन्वय पाया जाता हैं।

४.६.४ भाव प्रवणता :

भावों का उच्छलन गीतिकाव्य के प्राण हैं अर्थात सुख दु:ख की आवेगमयी स्थिति में ही गीति का जन्म होता हैं। निराला ने दो प्रकार के गीत लिखे हैं। १] दार्शनिक जिनमें चिन्तन की प्रधानता हैं। २] वे गीत जिनमें कवि के हृदय का सहज स्फुरण हैं।

" बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु।

कँपते थे दोनो पाँव बन्धु। " ७८

इन पंक्तियों में हृदय की सरसता का प्राधान्य हैं। स्मृति संचारी भाव की बहुत ही सफल अभिव्यक्ति हुई हैं। अत: ये उदाहरण भाव प्रवणता से युक्त एवं सिक्त हैं।

४.६.५ संक्षिप्तता :

गीति काव्य में अनुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति होती हैं, संक्षिप्तता इसका आवश्यक गुण हैं। निराला के कुछ गीत तो नौं पंक्तियों में ही समाप्त होते हैं।

" पावन करो नयन

दु:ख निशि करो शयन। " ७९

४.६.६. सारांश :

" अपरा " में गीतिकला का पूर्ण निखार उतरा हैं। निराला के कुछ गीत असाधारण प्रतिभासे युक्त हैं जिनमें " सरोज स्मृति ", "राम की शक्ति पूजा", " छत्रपति शिवाजी का पत्र " आदि हैं। संगीतात्मकता, लय बध्दता

भाव प्रवणता साथ ही साथ आत्माभिव्यक्ति व्यक्त हुई हैं मगर कही कही जगह संक्षिप्तता तत्व के बंधन तोडकर विस्तृताकर बन पडें हैं। कल्पना की प्रचुरता, चित्रण दक्षता एवं प्रभावशाली शब्द योजना की दृष्टि से "अपरा" के गीत महत्वपूर्ण हैं। सभी प्रकार के गीतो का समावेश भी हुआ हैं।

-: राष्ट्रीय विचारधारा :-

४.७.१ प्रस्तावना :

वह जन समुदाय जिसकी एक सामान्य भाषा, साहित्य, सामान्य संस्कृति, एक जाति, विदेशियों से सहज पार्थक्य की भावना, आर्थिक जीवन व्यवस्था, मत संरचनात्मक धारणा, एक शासन तंत्र, अंतराष्ट्रीय संबंधो की आकांक्षा, एक सामान्य धर्म और राजनीतिक रूप से संघटित एक भौमिक इकाई राष्ट्र कहलाता हैं। जिस राष्ट्र का संबंध जन समुदाय और उसकी समान मानसिक प्रतिबध्दता से है उसी प्रकार राष्ट्रीयता का संबंध पूर्ण रूप मानसिक हैं, और इसकी परिभाषा करना कठिण कार्य हैं। प्रोफेसर ब्रुचसेक के अनुसार राष्ट्रीयता की परिभाषा इस प्रकार हैं -- " राज्य के भीतर की पारस्पारिक संवेगात्मक समरूपता को ही राष्ट्रीयता मानते हैं। " राष्ट्रीयता के मुख्य अंग भौगोलिक एकता, जातीय एकता, भाषा की एकता, धार्मिक एकता राजनीतिक एकता आर्थिक आकांक्षा की समानता तथा सांस्कृतिक समानता। भारत शताब्दियों से विविधताओं के रहते हुए भी अपनी अनेक समानताओं के कारण एक राष्ट्र रहा हैं। सैकडो वर्षों तक परतंत्र में रहने के कारण इसकी मनिषा आहत हो गयी थी। फलत: विगत सात आठ शताब्दियों से हमारे देश का ऐसा कौनसा भी काल नहीं जिसे हम संसार के अन्य देशों के समक्ष रखकर हमारे देश को गौरवान्वित कर सके। आधुनिक युग में हमारी राष्ट्रीय भावना का यथार्थ जीवन में भी क्रमिक विकास हुआ था। उन्नीसवी शताब्दि में उसका मुख्य स्वरूप सामाजिक एवं धार्मिक पुनरूत्थान था, राजनीतिक संघर्षशीलता कुछ बाद में आयी। " अपरा " में निराला द्वारा अभिव्यक्त राष्ट्रीय विचारधारा इस प्रकार हैं, जिसमें सांस्कृतिक नवजागरण, देशभक्ति एवं वर्तमान के प्रति क्षोभ विद्यमान हैं।

४.७.२ सांस्कृतिक जन जागरण :

निराला के देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक विकृतियों का बोध करा कर अपने अनेक कविताओं के विषय बनाकर सांस्कृतिक जन जागरण का दृष्टिकोण अपनाया। "भिक्षुक ", "तोडती पत्थर", में आर्थिक विषमता तथा वर्गभेद "विधवा" में भारतीय विधवा की दयनीयता, " दान " में धार्मिक ठकोसला आदि अनेक सामाजिक विकृतियों को अपने व्यंग्य का विषय बनाया। "तुलसीदास" में भारत की सांस्कृतिक संपदा और नारी की महानता का चित्रण किया। इस प्रकार युग बोध जगाकर निराला ने सांस्कृतिक पतन के प्रति जागृत करने का प्रयास किया ।

४.७.३ भारत के अतीत के सांस्कृतिक वैभव का गौरव :

" अपरा " संकलन में अतीत के वैभव एवं वीरों के शौर्य शक्ति का स्मरण उनकी अनेक कविता की प्रेरणा का विषय हैं। " छत्रपति शिवाजी का पत्र " में ऐतिहासिक राष्ट्र पुरुष के रूप में प्रेरणा हैं जिसके शौर्य और चतुरता का उदाहरण गौरवपूर्ण हैं। एक ऐतिहासिक पत्र के माध्यम से निराला ने देशवासियों मे स्वदेश, धर्म, स्व-जाती के प्रति अभिमान, स्वाभिमान एवं कर्तव्य की भावना को जगाया हैं। "तुलसीदास", " राम की शक्ति पूजा " में सांस्कृतिक पूज्य कथाओं से प्रेरणा ग्रहण की हैं। " यमुना के प्रति ", "खण्डहर के प्रति " सहस्त्राब्दि में अतीत के वैभव की झाँकी प्रस्तुत की हैं। उदाहरण --

रही याद। वह उज्जयिनी, वह निरव साद

x x x x x x

x x x x x x

तोरणा तोरणा पर .....। " [९०]

निराला ने भारतवासियों के मन से दासता, आत्महिनता, और "पराजय" भावना को दूर करने के लिए गुरु गोविन्द सिंह की विरता का स्मरण दिलाकर भारतीयों को प्रोत्साहित एवं उत्तेजीत करने का प्रयास जागरण के हेतु लिखी कविता में किया हैं --

" सवा सवा लाख पर । एक को चढाउँगा ,

x x x x x x

x x x x x x

आय आज हैं स्थार । जागो फिर एक बार । " [८१]

४.७.४ देशभक्ति एवं देशप्रेम से युक्त रचनायें :

निराला के " अपरा " काव्य संकलन में राष्ट्रवन्दना का सुन्दर प्रयास उपलब्ध हैं । भारतमाता के प्रति असिम प्रेम और श्रध्दा के कारण उनके राष्ट्रीय गान सुंदर बन पड़े हैं । "भारती वन्दना " राष्ट्रगीत हैं जिसमें देश के समस्त स्म को सरस्वती के स्म की कल्पना की हैं । इसमें भारतीय संस्कृति के चिन्ह कमल का वर्णन कवि के भारतीय संस्कृति के प्रेम का द्योतक हैं ।

देश की प्रगति तब सम्भव हैं जब ज्ञान और सम्पन्ति का समन्वय हो । सरस्वती की वन्दना करके भारत को दु:ख के भार से बचाने के लिए, यहाँ का अन्धकार नष्ट करने के लिए, ज्ञान की किरणों द्वारा नव उषा की पलकों खोलकर अज्ञानान्धकार का विनाश कर देना चाहता हैं — जैसे —

" जागो जीवन धनिके
विश्व - पद्म - प्रिय वनिके
दु:ख - भार भारत तम केवल
पीर्य - सूर्य के ढके सकल दल,

खोलो उषा पटल निज अयि,
छबि मयि, दिन " मणिके।" ८२

" मातृ वन्दना " में उत्कट देश भक्ति की अभिव्यंजना हुई हैं। उन दिनो देश में स्वतंत्रता का आन्दोलन पूर्ण उत्कर्ष पर था। गांधीजी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन जोरो पर था। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में युवा कवि निराला की इस कविता में व्यक्त भारत माता के प्रति निष्ठा विशेष स्पृहणीय बन जाती हैं। " जागा दिशा ज्ञान " में भी राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत हैं।

" बन्दू पद सुन्दर तब " में मातृभाषा प्रेम अभिव्यक्त हैं। हिन्दी को विश्वभाषा बनाने की सुखद कल्पना भी राष्ट्रीयता की पहचान हैं --

" बन्दू पद सुन्दर तव .,
x x x
ज्योतिस्तर वासे।" ८३

४.७.५ वर्तमान के प्रति क्षोभ :

निराला को जहाँ अतित के प्रति आस्था हैं, वही वर्तमान के प्रति उसके हृदय में क्षोभ भी हैं। उसकी दृष्टि में परन्त्रता घोर अभिशाप हैं, देश को भूलाकर भेट के लिए आपस में लडना नितांत दासता हैं। प्रतिकार्य को ग्रहण करने पर इस उदाहरण में अंग्रेज शासन को उखाड फेंकने की चेतना को चित्रित किया हैं --

" शत्रुओं के खुन से
धो सके यदि एवं भी तुम माँ का दाग,
कितना अनुराग देशवासियों का पाओगे

निर्जर हो जाओंगे -
अमर कहलाओं गे " ८४

अपरा में अनेक कवितायें हैं जिनमें राष्ट्रीयता का विचार प्रकट हुआ हैं।

४.७.६ सारांश :

"अपरा" में निराला के राष्ट्रप्रेम की उदात्त भावना से ओंत प्रोत एवं उच्चकोटी के राष्ट्रीय गीत हैं। ये गीत देशानुराग की भावना जगाते हैं। साथ ही साथ जननी जन्मभूमि के पावन चरणों पर श्रध्दानत हो आत्मबलिदान कर देने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर स्थित " निराला " की यह राष्ट्रीय भावना विराट एवं आत्मगौरव से पूर्ण हैं। तत्कालीन स्थिति की आवश्यकता जन जागरण तथा आपसी ऐक्य स्थापना भी इनका विचार नजर आता हैं। भारत के सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर स्थित स्वर्ण इतिहास भी इनके काव्य से झलकता हैं। भारतमाता की वन्दना इनकी श्रेष्ठ कल्पना देशभक्ति को उद्घाटित करती हैं, तथा इनका राष्ट्रीय कार्य भी इनकी जीवन परिचय से परिचायक हैं।

-: संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिंब :-

४.८.१ संघर्षपूर्ण जीवन और निराला तथा "अपरा" :

निराला का " अपरा " काव्यसंकलन उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण काव्यसंकलन है। इस संकलन में उनके आयु के चौवन साल रेखांकित हुई हैं। साहित्य के बडे बडे विद्वानों ने कहा हैं कि साहित्यकार अपने साहित्य में अपने व्यक्तित्व की छाप जरूर होती हैं। यह छाप अंश या अधिकांश रूप में कही कही जगह अंकित होती हैं, चाहे वह रचना कल्पनात्मक हो या सत्य घटनापर आधारित हो, वैसे ही वह रचना वर्णनात्मक हो या चित्रणात्मक उसमें व्यक्तित्व की छाप जरूर होती हैं। परंतु व्यक्तित्व को छाप उस साहित्य में जादा होती हैं जो रचना अनुभूतिमय तथा आत्मकथामय होती हैं। निराला के " अपरा " में उसके व्यक्तित्व की एक अनुठी छाप हैं, जिसमें उनके संघर्षपूर्ण जीवन का परिचय उनके काव्य की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति हैं।

" अपरा " में " बादल राग ", " विफल वासना ", " स्मृति", "राम की शक्ति पूजा", " हिन्दी सुमनों के प्रति", " हताशा ", "स्नेहनिर्झर बह गया", " सरोज स्मृति " तथा अर्चना और अनेक गीतोमें निराला का संघर्ष-पूर्ण जीवन चित्रित हुआ हैं।

निराला के जीवन परिचय से हमें उनके मानसिकता पर पहूँचे हुये आघातों से परिचित होते हैं। उनके बाल्य काल में ही उनकी जन्मदात्री माता छोड गयी, जिससे वे माता प्रेम से अछुते रहे साथ ही साथ उनके पिता से उतना प्रेम नहीं मिला जितना वे चाहते थे। उनकी कच्छि उमर में पिताजी चल बसे और गृहस्थी का बोझ उनके कंधे पर आ पडा। उसके बाद उनके चाचा भी चल बसे।

विवाह के पश्चात उनकी प्रिय पत्नी एक पुत्र तथा एक पुत्री को सौंप कर परलोग सिधार चुकी उसके बाद कुछ साल बाद प्रिय पुत्री सरोज का देहान्त हुआ। निराला के जीवन में उसके अपने ही लोंगो की इस मृत्यू घटनाओं से इतना दु:ख हुआ कि वे किसी एक घटना को भूलने का प्रयास करते हैं तब दूसरी एक दुर्घटना घेर लेती थी। निराला इन घटनाओं से ऐसे बन गये जैसे एक मूर्तिकार ने एक एक घटनाओं का हथोडा मारकर एक संघर्ष की मूर्ति ही बनायी हैं।

" सरोज-स्मृति" एक आत्मकथात्मक शैली पर लिखी गयी महत्वपूर्ण कविता हैं। जिसमें जीवन की वेदना प्रकट हुई हैं। इस कविता की प्रेरणा उनके संघर्षशिल मन का एक संतुलन भाव ही हैं। कवि अपनी पुत्री सरोज के बीमारी का उपाय करने में अक्षम रहे। यह अक्षमता एक अपमान की तरह उन्हें बोछ रही थी, जिसकी कारण निराला आहत् हो उठे। निराला एक भावूक कवि होने के नाते अपनी गलती तथा अपना साहस मन में दबाकर जिनेवाले नहीं थे इसी कारण उन्होंने " सरोज स्मृति " में सरोज के जन्म से मृत्यू तक की उनसे निगडीत सभी घटनाओं का सूचियुक्त चित्रण करके अपने संघर्षशील जीवन का काव्य में परिचित दिया हैं।

" हिंदी सुमनों के प्रति " इस कविता में हिंदी साहित्यकार तथा साहित्य विद्वान आदि लोंगोद्वारा इनके काव्य की उपेक्षा की थी तभी उन्होंने संघर्षरत होकर अपने काव्य प्रतिभा को और सबल बनाने का प्रयास किया था, उसका वर्णन हुआ हैं।

४.८.२ सारांश :

कवि निराला अपना " निराला " नाम जब रखते हैं उसके पिछे की प्रेरणा जरूर संघर्षपूर्ण जीवन ही हैं। उनका काव्य उपेक्षित था तब वह खुद

अपनी प्रतिभा को संघर्षी बनाकर यही कहता है कि यह उपेक्षित नही अपेक्षित है, नया है इसमें भी साहित्यतत्त्व है, तुम्हे देखना होगा यह 'निराला' है। "अपरा" में बहुतसी कविताओं में संघर्षशील जीवन का प्रतिबिंब अंश-अधिकांश रूप में चित्रित हुआ है। कही कही पर प्रत्यक्ष रूप में तो कही कही परोक्ष रूप में इनके जीवन में बिते संघर्षों का तथा अन्य घटनाओं का प्रतिबिंब " अपरा " में स्थित है।

-: यथार्थवादी स्वर :-

४.९.१ यथार्थवाद तथा निराला :

हिन्दी साहित्य धारा में यथार्थ का सहारा लेकर जो साहित्य लिखा गया उस साहित्य को यथार्थवादी कहा गया। यथार्थ का सरल अर्थ हैं, जो हैं जैसा हैं वैसा ही सही रूप। भौगोलिक, प्राकृतिक, सामाजीक [राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक] परिस्थितियों का तत्कालीन सही चित्रण जब साहित्य में अंशिक या पूरा उतरता हैं उसे यथार्थ चित्रण या यथार्थवादी साहित्य कहा जाता हैं। अब निराला के साहित्य में तत्कालीन सामाजिक सभी परिस्थितियों का सही चित्रण कहाँ कहाँ है, यह तत्कालीन परिस्थितियों का इतिहास मध्य नजर रखकर अध्ययन करेंगे। वैसे इस तरह का विस्तृत अध्ययन करने से हमें जादह कुछ हाथ नहीं लगेगा, क्योंकि जब इस दृष्टि से संग्रह को मैंने पढा तो इसमें यह प्रवृत्ति बहुत ही कम हैं, ऐसा लगा। ज्यादातर कवितायें कल्पना तथा आत्मनिर्भर हैं, कही कही यथार्थ कल्पनाओं को ही साकार करने के प्रयास में कल्पना में समाया हैं। इस का मतलब कवि तत्कालीन परिस्थितियों से नजर अंदाज करता हैं, ऐसा नहीं। बहुतसी कविता में सामाजिक, भौगोलिक तथा प्राकृतिक घटनाओं का यथार्थ चित्रण करते नजर आते हैं, परंतु यह प्रवृत्ति इतर प्रवृत्ति से कुछ कम प्रभाव रखती हैं।

४.९.२ "अपरा" में यथार्थवादी स्वर :

"अपरा" काव्य संकलन एक प्रवृत्ति प्रधान काव्य संकलन हैं। इसमें यथार्थवादी स्वर प्रवृत्ति नजर आती हैं। जिसमें निराला समाज का सच्चा चित्रण करना नहीं भूले। दरिद्रता, चारित्रिक पतन, सांस्कृतिक पतन, धर्म आडम्बर, विषम अर्थव्यवस्था आदि का पर्दाफाश किया हैं। सडक पर झूठी पत्तल चाटने

के लिए कुत्तों से होड लेते हुये भिखारी जनों का एक दर्दनाक चित्रण "भिक्षुक " में लिखा हैं।

समाज के धनिकों को इन भिखारीयों पर जरा भी दया नहीं। मनुष्य की उपेक्षा करके भगवान की कृपा चाहनेवाले मानव समाज के कुछ सज्जनों का तत्कालीन मानवता मूल्यों का -हास का यथार्थ चित्रण "दान" कविता में मौजूद है। यथा --

" झोली से पुये निकाल दिये।
बढते कपियों के हाथ दिये।
देखा भी नहीं, उधर फिर कर
जिस ओर जा रहा था
वह भिक्षु इतर।" [८५]

विषम अर्थव्यवस्था से उत्पन्न वर्ग विषमता की अभिव्यक्ति हुई हैं। "तोडती पत्थर" कविता में साम्यवादी विचार को नजर रखकर निम्न वर्गों के मजदूरों के जीवन का यथार्थ कटुतापूर्ण शैली में चित्रित हुआ हैं। जिसमें शोषित दलित मानव की यथार्थता इस तरह हैं ----

" चढ रही थी धूप
x x x
जो मार खा रोई नहीं।" [८६]

"विधवा" में भारतीय विधवा दीन दशा का मार्मिक वर्णन किया हैं --

" वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी,
वह दीप शिखा सी शांत, भाव में लिन,
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा सी

वह टूटे तरु की छूटी लता सी दान
दलित भारत की विधवा हैं। " ८७

" वनबेला " कविता में पूँजीवादी व्यवस्थापर तीखा व्यंग्य किया हैं। पत्रकारों एवं नकली समाजवादीयों की अच्छी खबर ली गई हैं। सन १९३५ में काँग्रेस के अन्दर समाजवादी दल की स्थापना हुई थी और भारत की राजनीति में समाजवाद का हल्ला सुनाई पडा था। साथ ही साथ इस कविता में नागरिक कृत्रिम जीवन के प्रति आकृष्ठ हो रहा था उसके प्रति तीखा व्यंग्य किया हैं।

४.९.३ सारांश :

निराला के "अपरा" काव्य संकलनमें यथार्थवादी स्वर इतना मुखर नहीं जितना प्रगतिवादी कवियों में रहा हैं। फिर भी " अपरा " की कविताओं में मजदूर समस्या, किसान समस्या, धर्म समस्या, संस्कृति समस्या, राजनीतिक समस्या, अर्थ समस्या, वर्ग समस्या आदि पर यथार्थवादी स्वर के चित्रण पाये जाते हैं। निराला समस्त समस्याओं को क्रान्ति के जरिये मिटाना चाहते हैं, जो वह भी एक यथार्थवादी स्वर हैं। अत: उनका यह संकलन यथार्थवादी स्वर प्रवृत्ति से युक्त रहा हैं।

-: सौंदर्य और प्रेम :-

४.१०.१ सौंदर्य :

" अपरा " काव्य संकलनमें निराला की सौंदर्य दृष्टि अत्यंत संयमित और पवित्र हैं। निराला का काव्य दार्शनिक एवं आध्यात्मिक गंध से परिपूर्ण होने के कारण उसमें नारी सौंदर्य के मादक एवं मांसल तथा ऐंहिक चित्रों का अभाव हैं। चटकिले और गहरे रंग भी उन्होंने नहीं भरे, उन्होंने तो हल्के रंगो से सात्विक परिधानों में अपनी सौंदर्य प्रतिमाओं का विन्यास किया हैं।

४.१०.१.१ नारी सौंदर्य :

संयम और सात्विकता के कारण निराला अपनी पुत्री का संयमपुर्ण यौवन सौंदर्य का चित्रण उनकी काव्य कला का सफल प्रयास हैं। पिता द्वारा किया गया पुत्री का रम्य वर्णन विश्व साहित्य में बेजोड उदाहरण हैं। अपनी पुत्री सरोज का यौवनागम का चित्रण ---

" धीरे - धीरे फिर बढा चरण,
x x x x x
x x x x x
उत्कलित रागिनी की बहार। " [८८]

नारी सौंदर्य का सांकेतिक प्रतिकात्मक चित्रण से यौवन के प्रथम आगमन से युवती की अवस्था को अंकित किया है ----

" घेर अंग - अंग को
x x x
किरण सम्पात से। " [८९]

रूप वर्णन में प्राय: भड़किले चित्र ना के बराबर हैं। निराला के उपमान पारंपारिक हैं फिर भी उनके विशिष्ट प्रयोग के कारण वे नया सौंदर्य उत्पन्न करते हैं। रूप वर्णन में नयन, उरोज, केशोपाशों का अधिक वर्णन किया हैं। नायिका के नयन की आकृष्ट क्षमता का सुंदर उदाहरण --

" दृग दल शोभी फुल्ल नयन ये,
जीवन के मधु गन्ध चयन ये। " [९०]

"तोड़ती पत्थर", "तुलसीदास", यामिनी जागी", "जागृति में सुप्ति थी", " जागो फिर एक बार", "विफल वासना", " विधवा ", आदि कविताओं में नयनो के सुन्दर सौंदर्य की व्यंजना की हैं।

" जुही की कली ", " वनबेला " में जुही और पवन तथा पृथ्वी और सूर्य के सौंदर्य संबंधी चित्रण मिलते हैं। "संध्या सुंदरी", में नखसिख वर्णन में अधरों एवं कुंचित केशो का सुंदर वर्णन हैं। प्रात:काल पर रात्री जागरण के आरोपन से निराला ने सद्यजागृत नायिका का जो सौंदर्य चित्र प्रस्तुत किया हैं, वह बहुत ही सुंदर हैं। अलसाये हुये दृग - कमल, अस्ण मुख, पीठ, गर्दन, भुजाओं और बिखरे बालों की शोभा आदिका सौंदर्य चित्रण रीति-कालीन सौंदर्य चित्रण की तरह दिखाई देता हैं। --

" अलस पंकज - दृग, अरुण - मुख
x x x x x
द्युति ने क्षमा माँगी -----।" [९१]

४.१०.२ पुरुष सौंदर्य :

"अपरा" में जिस प्रकार नारी सौंदर्य चित्रण किया हैं उसी प्रकार पुरुष

सौंदर्य चित्रन में रुचि नहीं पायी जाती। इसका कारण पुरुष सौंदर्य या तो नारी का विषय हैं। जो भी हो निराला पौरुष के कवि हैं। इसलिए उनके काव्य में पुरुष सौंदर्य मुक्त कविताएँ मौजुद हैं।

" राम की शक्ति पूजा " में राम, रावण, कपिदल, सुग्रीव, बिभीषण गवाक्ष, गय, नील, नल, सौमित्र जाम्बवान और महाबली हनुमान के युध्दरत शौर्य सौंदर्य को दिखाकर राम, लक्ष्मण, तथा हनुमान के उच्चवीर रूपों में उद्घाटन करके उनके पुरुष सौंदर्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

" छत्रपति शिवाजी का पत्र " में शिवाजी द्वारा की गयी जयसिंह की प्रशस्ति ने उसके वीर रूप की अन्तरबाह्य झाँकी इसतरह काव्य में बँधी हैं।

" वीर! सर्दारों के सर्दार! - महाराज।
बहुजाति क्यारियों के पुष्प पत्र दल भरे
आन बान शान वाला भारत उद्यान के नायक हो,
रक्षक हो। " १२

४.१०.१.३ बाल सौंदर्य :

बाल सौंदर्य का सबसे सुंदर रूप अपरा में संकलित " सरोज स्मृति " में उस स्थान पर प्राप्त होता हैं जहाँ कवि निराला अपनी पुत्री का बाल्यकाल चित्रित करता हैं।

" तू सवा साल की जब कोमल, पहचान रही ज्ञान में चपल,
मा का मुख, हो चुम्बित क्षण - क्षण, भरती जीवन में नवजीवन
वह चरित पूर्ण करगयी, तू नानी की गोद जा पली। सब किये
वही वही कौतुक विनोद उस घर निशि वासर भरे मोद, खायी भाई
की मार विकल रोयी उत्पल दल हग छलछल, चुमकारा फिर उसने
निहार, फिर गंगा तर सैकत विहार करने को लेकर साथ चला,
[illegible] आसुओं

तू गहकर चली हाथ चपला, आँसुओं भरा मुख हासोच्छल, लखती
प्रसार वह उर्मि धवल।" [९३]

"अपरा" में बाल सौंदर्य के अन्य रूप नहीं मिलते यही एक ऐसी कविता हैं जिसमें बाल्यकाल के चित्रण में सरोज का बाल सौंदर्य निखरा हैं।

४.१०.२ प्रेम :

"अपरा" काव्य संकलन में प्रेमभावना युक्त सुंदर कविता संकलित हैं। जिसमें मुक्त प्रेम तथा सूक्ष्म चित्रण द्वारा प्रणय के मांसल चित्र भी हैं। निराला ने आधुनिक संघर्षरत मन को जिस मुक्त प्रेम, व्यापार कल्पना में उतारा हैं वह अत्यंत सुंदर हैं। द्वापर कालीन गोप जीवन में मुक्त प्रेम की जो धारा प्रवाहित हुई थी कवि ने " यमुना के प्रति " में उसे फिर एक बार दोहराया और मुक्त प्रेम व्यापार का परिचय कराया। शृंगार के संयोग वियोग का स्वानुभूतिमय चित्रण हुआ हैं। डॉ. बुध्दसेन निहार का प्रेमाभिव्यक्ति विषयक मत इस प्रकार हैं -- " सौंदर्य का मुलाधार प्रेम, कामभावना या मादन भाव हैं। निराला ने भी समग्र सृष्टि का आधार प्रेम को ही स्वीकार किया हैं। "[९४] छायावादी युग प्रभाव से "अपरा" में प्रेम भावना का चित्रण अधिक सूक्ष्म, प्रतिकात्मक एवं रहस्यवादी दृष्टि से युक्त हैं। सामाजिक बधंनों एवं वैयक्तिक असफलताओं से उद्भूत अतृप्ति एवं कुंठा भी विद्यमान हैं।

४.१०.२.१ व्यक्तिगत अनुभूति युक्त प्रेमभावना :

" तुम कर पल्लव - झंकृत सितार
मैं व्याकुल विरह रागिनी।
तुम पथ हो मैं रेणु,
तुम हो राधा के मनमोहन
मैं उन अधरों की वेणु।" [९५]

व्यक्तिगत प्रेम की अभिव्यक्ति कई रूपों में हुई हैं। अध्यात्मिक अनुभूति, स्वर्गीया पत्नी की स्मृति और पुत्री की करुनाजनक अनुभुतियों में इसका निखार अधिक प्रखर हुआ हैं। कभी कभी अज्ञान प्रेमिका के प्रति व्यापक भावभूमि वाले प्रणय की अनुभुति अपनी दिव्यता से मन को निर्मल बना देती हैं। इस कोटी के प्रेमभावना के तीन रूप इस अपरा संग्रह में अभिव्यक्त हुये हैं वे इस तरह ---

अ] अज्ञात प्रिया के प्रति प्रेम,
ब] पत्नी प्रेम, और
क] पुत्री प्रेम।

अ] अज्ञात प्रिया के प्रति प्रेम :

"अपरा" में संकलित एक कविता "प्रभाती" में निराला अनाम प्रिया का जागरण सन्देश सुनता हैं। --

" वासना प्रेयसी बार बार
x x x x
वह चलने का बल तो लो। " [९६]

"विफल वासना" में प्रेम के देव के समक्ष अपने प्रेम के विफलता का अफसाना सुनाता हैं फिर भी पाठको के मन में प्रिया अनाम ही रहती हैं --

" वैसे ही मैने अपना सर्वस्व गँवाया,
x x x x x x
अथवा दु:ख के देव सदा ही निर्दय ?" [९७]

ब] पत्नी प्रेम :

कवि निराला का पत्नी प्रेम विरह भाव से उद्दिप्त होकर विहाग राग के रूप में परिवर्तित हो जाता हैं। ऐसी चित्रण संध्या सुंदरी में हुआ हैं। अपनी अलौकिक प्रिय पत्नी की स्मृति से युक्त ये पंक्तियाँ " मरण दृश्य " में इसतरह--

" दिये थे जो स्नेह चुम्बन
आज प्याले गरल के घन,
कह रही हो हंस..... प्रियो, प्रिय। " [९८]

क] पुत्री प्रेम :

पुत्री के प्रति स्नेहालु होता हैं। पितृ स्नेह समुचित पालन पोषण का कर्तव्य और अनेक। " सरोज स्मृति" में पितृ प्रेम का सुंदर उदाहरण विस्मृत पाया जाता हैं।

४.१०.२.१ पत्नी प्रेम :

विरहिणी पत्नी का प्रेम अनन्यता के साथ चित्रित हुआ हैं। आकाश में काले बादलों का घिर आना विरहिणी के प्रणय संताप का घिरना हैं। तब प्रियतम का वादा स्मरण आता हैं। वह अपनी अक्षमता पर खीजती हैं। देखिए यह चित्रण --

" छोड गये गृह जब से प्रियतम्,
बीते कितने दृश्य मनोरम,
क्या मैं ऐसी ही हूँ अक्षम
जो.. न-रहे बस के। " [९९]

नायिका अपने प्रिय मिलन का स्मरण करती हुई कहती हैं, सुमन न भर

लेने का पश्चाताप हो रहा हैं। वासन्ती वातावरण में प्रिय ने हाथ में हाथ लेकर आगाह किया था। ऐसा भी पत्नी का प्रेमिका रूप " अपरा " में मिलता हैं। " तुलसीदास में पत्नी के सौंदर्य और प्रेम आकर्षण से तुलसीदास के अनाहुत पत्नी के पिछे चलना पत्नी आकर्षणीय रूप हैं। जिससे प्रेम की असिम वासनामय शक्ति का चित्रण हुआ हैं। " राम की शक्ति पूजा " में पत्नी प्रणय का मानसिक भाव चित्र राम के मानस पर उतरा हुआ दिखाया गया हैं।

४.१०.२.२ प्रेमिका प्रेम और मुक्त प्रेम :

मुक्त प्रेम की सुंदर और स्पष्ट अभिव्यक्ति " प्रेयसी " कविता में मिलती हैं। जिसमें सहज और सात्त्विक प्रेम का आकर्षण हैं। मनोकुल प्रेमी के मिलने पर प्रणय के आकर्षण ने प्रेयसी ने स्वय को मन से प्रेमी के लिए सौंप दिया, फलत: प्रेम में मुक्तता आ गयी --

" मिले तुम एकाएक, देख मैं रुक गयी
x x x x x
प्रणय के प्रलय में सीमा सब खो गयी। " [१००]

" यामिनी जागी " में प्रेमिका के अप्रतिम सौंदर्य का चित्रण हैं जो रात में तल्ल अनुरागी बनी हैं। " वसंत आया " में विरहिणी प्रेमिका वसंत सुषमा पर मुग्ध होकर " मिली मधुर प्रिय " तुर तरु - पतिका " का एहसास कर सारी प्रकृति को मिलन प्रसंग से जोड देती हैं। " जागृति में सुप्ति थी " में प्रणय की घटना का चिन्तन प्रधान चित्र तथा प्रभात काल जागरण और जागरण में प्रणय की निद्रा में क्लांत लेटी हुई नायिका का चित्रण इस तरह --

" लाज से सुहाग का
x x x
जागरण क्लान्ति थी। " [१०१]

" जुही की कली " में पत्नी प्रेम या प्रेमिका प्रेम यह निश्चित कहा नहीं जाता फिर भी वातावरण और मुक्त प्रेम के कारण उसे हम युक्त प्रणय व्यापार के कोटी में रखे तो अनुचित नहीं होगा। सोती हुई नायिका को एका एक जगाकर उससे प्रणय व्यापार करने वाला निर्दयी नायक देखिए संभोग शृंगार का सटिक वर्णन --

" निर्दय उस नायक ने निकट निठुराई की
x x x x x x x x
नम्र मुख हँसी-खिली, खेल रंग प्यारे संग। " १०२

४.१०.३ सारांश :

निराला के " अपरा " काव्य संकलन में सौंदर्य और प्रेम की भावना का सुंदर चित्रण हुआ हैं। नारी सौंदर्य एवं प्रणय भावना के शोभाशाली चित्र अंकित हुये हैं।

निराला के सौंदर्य भावना के चित्रण में सौंदर्य के प्रति स्वस्थ आकर्षण का भाव सर्वत्र विद्यमान हैं। लौकिक प्रेम की कुछ कविताएँ उन्होंने अपनी पत्नी को लक्ष्य करके लिखी और कुछ प्रेयसी को। पुरुष सौंदर्य जिसमें वीर और शौर्य के चित्र, बाल सौंदर्य में अपनी ही पुत्री के बाल्य काल का सुंदर चित्रण किया हैं। नारी सौंदर्य में शारीरांगो का सूक्ष्म, संयमित और शुध्द चित्रण हैं, जिसमें मादकता मांसलता न के बराबर हैं।

निराला के " अपरा " में प्रेम भावना में मुक्त प्रेम की भावना जो सभी बंधनों को तोडकर अपना प्रेम व्यापार में लिन होती हैं। प्रेम भावना में सूक्ष्म एवं मांसल वर्णन कही जगह पाये जाते हैं परंतु वे इतने भडकिले नहीं उसमें

अध्यात्मिकता एवं रहस्यात्मकता की गंध आने से अधिक सुंदर एवं संयमित लगते हैं। व्यक्तिगत प्रेम भावना से युक्त प्रेम, पत्नी प्रेम तथा प्रेमिका प्रेम के शिलन वर्णन पाये जाते हैं।

अनन्य कविताओं में जो सौंदर्य एवं प्रेम युक्त चित्र बिखरे हैं, उनमें उदात्तता गहराई तथा अंतकरण की उमंग भी नजर आती हैं। मुक्त प्रियता रहस्यात्मकता एवं सामान्य भावभूमिसे सौंदर्य और प्रेम युक्त चित्रण में सूक्ष्म आनंद की प्राप्ति होती हैं।

-: व्यंग्य :-

४.११.१ व्यंग्य का स्वरूप :

संस्कृत साहित्यशास्त्र के आचार्यों ने व्यंजना शब्द शक्ति से प्रकटित अर्थ को 'व्यंग्य' संज्ञा प्रदान की हैं। व्यंजना शक्ति का सामान्यत: अर्थ होता हैं प्रकाशन शक्ति। यहाँ व्यंजन या प्रकाशन शक्ति का संबंध " शब्द " से हैं। " अंजन " शब्द में " वि" उपसर्ग लगाने से निर्मित व्यंजन शब्द का अर्थ हैं -- "विशेष" प्रकार का अंजना आँख में लगा हुआ हैं। अंजन जिस प्रकार दृष्टिदोष को दूर कर उसे निर्मल बना देता हैं, उसी प्रकार व्यंजना शक्ति के शब्द के मुख्यार्थ तथा लक्षार्थ को पिछे छोडती हुई उसके मुल में छिपे अकथित अर्थ को द्योतित करती हैं। " अभिधा तथा लक्षणा अपने अर्थ का बोध कराकर जब विरत हो जाती हैं, तब जिस शब्द शक्ति द्वारा व्यंग्यर्थ ज्ञान होता हैं उसे व्यंजना शक्ति अथवा व्यापार कहतें हैं। " [१०३] जिस प्रकार वस्तू पहले से विद्यमान किन्तु गूढ वस्तु को प्रकट कर देती हैं, उसी प्रकार यह शक्ति मुख्यार्थ या लक्ष्यार्थ के झिने पर्दे में छिपे हूए व्यंग्यार्थ को स्पष्ट कर देती हैं। जब की इससे भिन्न अर्थ में अंग्रेजी भाषा शब्द " सैटायर " का पर्याय व्यंग्य माना हैं। इसमें सन्देह नही वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य में बहुप्रयुक्त व्यंग्य ने मात्र व्यापकता ही नहीं की, प्रत्युत स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित होकर व्यवस्थित रूप भी धारण किया। जहाँ सैटायर को हिन्दी के व्यंग्य का पर्याय मानना या न मानना वाद का प्रश्न हैं। तो यहाँ " व्यंग्य " शब्द " सैटायर " का पर्याय के रूप में स्विकृत भी हो चुका हैं। सैटायर शब्द लैटिन के " सेतुरा " से विकसित हैं, जिसका अर्थ " गडबड झाला " हैं। व्यंग्य के स्वरूपगत वैशिष्ट्य को चित्रित करते हुए कुछ विद्वानोंने कुछ अन्य विशेषता प्रतिपादित की हैं। आधुनिक साहित्य के तीखे व्यंग्यकार डॉ. हरिशंकर परसाई जीका यह मत -- " अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ठ रूप होता हैं।" [१०४]

डॉ. नगेंद्र अपना मत इस प्रकार प्रकट करते हैं -- " व्यंग्य सदा सौद्देश्य होता है, उपहास द्वारा ताडना अभिप्राय होता है। " [१०५] व्यंग्य रचना में मूलत: विधायक तत्वों का प्रमुख योगदान रहता है। इसकी गणना डॉ. मेहंदीरत्ता के अनुसार इस प्रकार -- " मूल तत्व ये हैं -- १] आलोचना २] हास्य अथवा विभत्सना तथा सुधार। आलोचना प्राय: खण्डनात्मक होती हैं और स्पष्ट खण्डनात्मक आलोचना में यदि कलात्मक प्रहार किया गया हो तो व्यंग्य उसमें झाँका जा सकता है। अन्य तत्व हास व विभत्सना में हास्य को व्यंग्य की तीक्ष्णतावर्धक तथा तिक्तता कम करने में सहयोग देनेवाला कहा जाता हैं। विभत्स चित्रण के अनुपात से छुपा विकृति का परिहार होता हैं। अभिम तत्व सुधार वस्तुत: व्यंग्य का उद्देश्य है, जिससे प्रेरित होकर व्यंग्यकार विकृत्तियों व विसंगतियों पर प्रहार करता हैं। " [१०६] अन्य साधनों में आपने उपहास, विडम्बना, अपकर्ष, अतिशयता तथा वैदग्ध को ग्रहण करके इन्हे व्यंग्य के अस्त्र माने हैं।

डॉ. शेरजंग गर्ग का यह व्यंग्य वर्गीकरण डॉ. नायर के एक ग्रंथ से इस तरह मिलता है।

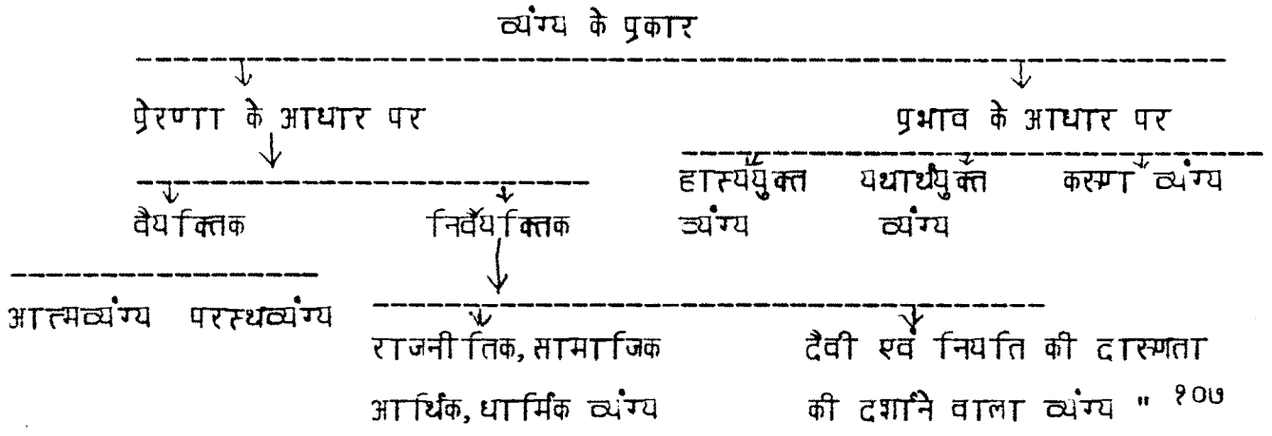

डॉ. जे. रामचंद्र नायर का व्यंग्य विषयक मत " सफल एवं उत्कृष्ठ व्यंग्य

वही होता हैं, जिसमें संवेदनशिलता, गंभीरता, बौध्दिकता, सांकेतिकता, शिष्टता, तथा तटस्थ विश्लेषण हैं। ये ही गुण व्यंग्य को तीक्ष्ण, प्रयोजन कारी तथा जीवन की मर्मस्पर्शी विडम्बनाओं को छुने वाला बताते हैं। हृदय एवं मस्तिष्क के समन्वय के कारण व्यंग्य शिष्ट एवं मार्मिक बन जाता हैं। काव्य में ऐसे ही व्यंग्य की महत्ता हैं " [१०८] इस तरह हम व्यंग्य के स्थित स्म के बारे में संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करके अब निराला के " अपरा " में व्यंग्य की खोजबीन करेंगे।

४.११.२ निराला और व्यंग्य :

बिना दवात का पेन क्या और बिना व्यंग्य का " निराला " क्या ? ऐसा रिश्ता निराला और व्यंग्य में हैं। निराला का व्यंग्य प्रधान साहित्य विपुल हैं, जिसमें मुख्यत: कुक्कुरमुत्ता व्यंग्यप्रधान काव्य हैं। "अनामिका", "बेला", "नये पत्ते", " अणिमा " आदि अन्य रचनाओं में व्यंग्यप्रधान कविताओं की कमी नहीं हैं। निराला का गदय साहित्य भी व्यंग्य से ओत प्रोत हैं। उनका व्यंग्य सौष्ठव " अप्सरा", " निरुपमा ", जैसे उपन्यासों, "बिलेसुर बकरिहा" तथा " कुल्लीभाट ", जैसे रेखाचित्रों और " चतुरी चमार", "देवी" आदि कहानियों में पाया जाता हैं। वैसे वे प्रथमत: मतवाला के संपादक के स्म में " चाबुक " नामक स्थंब में व्यंग्यों का सहारा लेते थे। डॉ. बच्चनसिंह अनामिका के व्यंग्यों पर अपना मत प्रकट करते हैं -- " इनमें शुध्द व्यंग्य तथा सामाजिक दृश्यों का चुभता हुआ चित्रण हुआ हैं। " [१०९] जो कृष्णादेव झारी इस तरह कहते हैं, -- " अपनी अपूर्व व्यंग्य शक्ति से निराला एक महान समाज द्रष्टा कलाकार थे। " [११०]

४.११.३ "अपरा" काव्यसंकलन में व्यंग्य :

" अपरा " काव्यसंकलन निराला के चुनिंदा कविताओं का संग्रह हैं,

जो उनके काव्यसाहित्य का प्रतिनिधीत्व करता हैं। इसमें व्यंग्य युक्त कविता इस प्रकार हैं -- " दान ", " तोडती पत्थर ", " बनबेला ", " भिक्षुक ", "विधवा ", "सरोज स्मृति", "हिन्दी सुमनों के प्रति पत्र ", " छत्रपति शिवाजी का पत्र ", तथा " तुलसीदास " आदि।

निराला के जीवन :

दृष्टी में तत्कालीन, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं निजी जीवन संघर्ष भी अधिक सहयोगी रहा हैं। साहित्यिक मंच पर राजनीतिक नेताओं का सन्मान किया जाता था एवं वे नेतागण साहित्य के विषय में इधर उधर की कुछ बाते कहकर आन्तराष्ट्रीय घटनाओं के प्रवाह में सभी को बहा ले जाते थे। निराला को ऐसे साहित्यिक समारोह से घृणा थी, जिनमें एक प्रकार का अभिनय होता था। अभिनय और उसमें झूठी सहानुभुति से निराला को नफरत थी। बडे बापो के पुत्रो के प्रति निराला का आक्रोश बढता ही गया जो विदेशों में उंची शिक्षा प्राप्त करने के बाद यहाँ आकर नेता बनकर डोलते हैं। अमीर - गरीब तथा जातीभेद के विरुध्द निराला का आक्रोश क्रमश: बढता गया, फलत: ग्लानी एवं निराशा का जन्म हुआ। और खुद अनेक संघर्षों से लडते लडते आर्थिक विषमता से घिरे रहते तब उनकी प्रतिभा व्यंग्य को लक्ष बनाती हैं। जैसे इस तरहा --

" फिर लगा सोचने यथासूत्र - मैं भी होता
x x x x x x
लिख अग्रलेख अथवा छापते विशाल चित्र। " [१११]

कवि निराला अपने भविष्य की रचना में लगे स्वार्थी धनिकों, सिध्दान्तहीन, संपादकों, ढोंगी नेताओं और उनकी झूठी यशावृध्दि में झूठे गीत रचनेवाले पेशेवर कवियों आदि अनेक आलम्बनों को अपने व्यंग्य का शिकार बनाया हैं।

सरोज की मृत्यू का काल आर्थिक विषमता और वेदनामय रहा। अपनी अर्थोपार्जन एवं यशाप्राप्ति की असफलता पर व्यंग्य हैं। जिसे आत्मव्यंग्य कह सकते हैं।

" तब भी मैं इसी तरह समस्त
x x x x
दे एक पंक्ति - दो में उत्तर। " [११२]

कान्यकुब्जों पर तीखा व्यंग्यात्मक आक्रमण एक सामाजिक व्यंग्य इस प्रकार --

" ये कान्यकुब्ज - कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करे छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेा
इस विषय बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरुस्थल - नहीं सुजल " [११३]

सरोज स्मृति में निराला ने धर्म और समाज की रूढियों पर तीखे व्यंग्य कसे। जन्म कुण्डलिओं पर भाग्य अेक पढ़ने की प्रवृत्ति का मजाक उडाते हुए इन्होंने लिखा हैं कि मेरे जीवन में कुण्ड़ली दो विवाह बता रही थी, फिर भी वे पत्नी के मृत्यू के पश्चात दूसरा विवाह करने से टालते हैं। उस कुण्ड़ली के टुकडे कर डालते हैं --

" पढ लिखे हुए शुभ दो विवाह
हँसता था, मन में बडी चाह
खण्डित करने को भाग्य अंक
देखा भविष्य के प्रति अशंक। " [११४]

निराला हिन्दी के उन साहित्यकारों को सम्बोधित करते हैं जो अच्छे और उच्च साहित्यकार कहलाते हैं। आत्मगत उपेक्षिता से हिन्दी संसार की कृतघ्नता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं। देखिए प्रतिकात्मक शैली में " महाराज " शब्द के अंतर्गत छिपा तीखा व्यंग्य जो मुख्यार्थ के पर्दे को हटाकर लाक्षणिक अर्थ को प्रकट करता है ---

मैं जीर्ण - साज बहु - छिद्र आज
तुम सुदल सुरंग सुवास सुमन
मैं हूँ केवल पद तल आसन,
तुम सहज विराजे महाराज। " ११५

तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली मायके जाने के बाद तुरंत वह उसके आकर्षण से अनिमंत्रित ही ससुराल जाता है। वहाँ रत्नावली अपने पति को कटूक्तियों द्वारा धर्म की बाते सिखाती है -- काम के आधिन होना वह अधर्म मानती है ---

" धिक ! आए तुम यों अनाहुत,
धो दिया श्रेष्ठ कुल धर्म धूँत,
राम के नही, काम के सुत कहलाए।
हो बिके जहाँ तुम बिना दाम
वह नहीं और कुछ हाड चाम।
कैसी शिक्षा, कैसे विराम पर आए। " ११६

"विधवा" तथा "भिक्षुक" दोनो कविताएँ सामाजिक निती के उपर करूण व्यंग्य है। जिसमें यथार्थता भी विद्यमान है। आर्थिक विषमता का बोध कराकर कवि निराला वर्ग विषमता पर कटाक्ष किया है। इस तरह की कविताओं का यह एक उदाहरण --

" नहीं छायादार
पेड वह जिसके तले बैठी हुई स्विकार,
x x x x x
सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्रकार। " ११७

" दान " कविता में ढोंगी भक्त पर जो निराला ने व्यंग्य किया हैं, वह निश्चित ही हास्य के बाहर घृणामुक्त हैं। स्वार्थी और ढोंगी भक्त बंदरो को मालपुये खिलाता हैं, पर भूख से तडपते हुये कंकाल शोष नर भिक्षुक को दुत्कार देता हैं। इसतरह --

" झोली से पुए निकाल लिये,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये।
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर।
चिल्लाया किया दुर दानव,
बोला मैं " धन्य, श्रेष्ठ मानव। " ११८

दैवी एवं नियति की दासमाता दर्शानेवाला व्यंग्य अनेक जगह अस्पष्ट रुप में मिलता हैं। इस उदाहरण में देखिए अपनी प्रिय पत्नी के वियोग से दु:खी कवि उस निर्दय घटना को ऐसा व्यक्त करता हैं।

" तुम्हे कहूँ मैं प्रेममय, कही प्रेममय
अथवा दु:ख के देव सदा ही निर्दय ? " ११९

४.११.४ सारांश :

"निराला " के अपरा काव्यसंकलन में व्यंग्य प्रवृत्ति की सबल अभिव्यक्ति

दृष्टिगत होती हैं, जिसमें वैयक्तिक व्यंग्य, निर्वैयक्तिक व्यंग्य साथ ही साथ ही साथ यथार्थ एवं करुणाप्रद चित्र पाये जाते हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक पक्षोंपर भी व्यंग्य खिंचे हैं। " अपरा " में हास्यरस युक्त व्यंग्य न के बराबर हैं। इस संकलन के व्यंग्यों में कटुता तिक्तता, नुकिलापन, प्रहार, आक्रोश, कटाक्ष एवं कठोर वचन से समाज के बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया हैं। सामाजिक सुधार एवं बदलाव की अपेक्षा कविताओं में प्रकट करके निराला ने अपनी सामाजिकता निभाने का सफल प्रयास किया हैं। इस तरह निराला और व्यंग्य एक अच्छा समन्वय " अपरा " में नजर आता हैं।

-: अध्याय चार :-

पाद टिप्पनी - [संदर्भ सूची]

१. श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय : महाप्राण निराला, पृष्ठ ७१

२. निराला : अपरा [सरोज स्मृति], पृष्ठ १५८

३. डॉ नामवर सिंह : छायावाद पृष्ठ २०

४. डॉ नागेंद्र : आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रकृतियां पृष्ठ १६

५. शिवकुमार शर्मा : हिन्दी साहित्य युग और प्रकृत्तियाँ, पृष्ठ ५०४

६. निराला : अपरा : [अध्यात्म फल], पृष्ठ ५८

७. वही [बादल राग] पृष्ठ १३

८. वही [दलीत जनपर करो करुणा], पृष्ठ १६०

९. वही [विफल वासना], पृष्ठ १२०

१०. वही [राम की शक्ति पूजा], पृष्ठ ४५

१०.अ. निराला अपरा [तरंगों के प्रति], पृष्ठ ७३

११. वही [हिन्दी सुमनों के प्रति] पृष्ठ ३४

१२. वही [हताशा] पृष्ठ ७१

१३. वही]सरोज स्मृति] पृष्ठ १५८

१४. वही [बादल राग] पृष्ठ १३

१५. वही [छत्रपति शिवाजी का पत्र] पृष्ठ ८१

१६. वही [जागा दिशा ज्ञान] पृष्ठ ३२

१७. वही [यमुना के प्रति], पृष्ठ ९२

१८. वही [गर्जन से मर दो वन] पृष्ठ ३७

१९. वही [जुही की कली] पृष्ठ १५

२०. बृहत हिंदी कोष, पृष्ठ ९५०

२१. राम कुमार वर्मा : कबीर का रहस्यवाद, पृष्ठ १५

२२. डॉ दुर्गाशंकर मिश्र महाकवि निराला का काव्य - एक विश्लेषण, पृष्ठ४७

२३. डॉ कृष्णदेव झारी : युग कवि निराला, पृष्ठ १९२

२४. डॉ. रामरतन भटनागर : रहस्यवाद, पृष्ठ १४

२५. डॉ. बच्चुलाल अवस्थी ज्ञान":काव्य में रहस्यवाद, पृष्ठ ४५

२६. राममूर्ती त्रिपाठी : रहस्यवाद, पृष्ठ २८

२७. निराला अपरा [यमुना के प्रति] पृष्ठ ९६

२८. वही]मुझे स्नेह क्या मिल सकेगा], पृष्ठ ५९

२९. वही [तुम और मैं], पृष्ठ ६८

३०. वही [सध्या सुंदरी], पृष्ठ २३

३१. वही [जागों फिर एक बार] पृष्ठ १९

३२. वही [विफल वासना], पृष्ठ १२०

३३. वही [तुम और मैं], पृष्ठ ६४

३४. वहीं [अर्चना] पृष्ठ १८५

३५. डॉ. राममुर्ती त्रिपाठी हिंदी साहित्य का इतिहास , पृष्ठ ४३३

३६. वही पृष्ठ ४३४

३७. वही पृष्ठ ४३४

३८. वही पृष्ठ ४३४

३९. निराला: अपरा : [सरोज स्मृति], पृष्ठ १५४

४०. वही [छत्रपति शिवाजी का पत्र], पृष्ठ ८९

४१. वही [आवाहन] पृष्ठ ११७

४२. वही [बादल], पृष्ठ ४२

४३. वही [वनबेला], पृष्ठ ६३

४४. वही [बादल राग] , पृष्ठ १३

४५. वही [भिक्षुक] पृष्ठ ६७

४६. वही [स्नेह निर्झर बह गया], पृष्ठ १४५

४७. वही [तोडती पत्थर] पृष्ठ १७१

४८. वही [देवी सरस्वती], पृष्ठ १७१

४९. वही [जागो फिर एक बार३] पृष्ठ २०

५०. वही [जागो फिर एक बार २] पृष्ठ १९

५१. वही. [छत्रपति शिवाजी का पत्र], पृष्ठ ८९

५२. वही. [छत्रपति शिवाजी का पत्र], पृष्ठ ८९

५३. उषा यादव : निराला, पृष्ठ ४८

५४. निराला : अपरा [वसन्त आया], पृष्ठ २५

५५. वही : [जागो फिर एक बार - १], पृष्ठ १६

५६. वही : [संध्या सुंदरी], पृष्ठ २२

५७. वही : [शेष], पृष्ठ २७

५८. वही. [देवी सरस्वती], पृष्ठ १६९

५९. वही. [गहन है अन्धकारा], पृष्ठ १४४

६०. वही. [राम की शक्ति पूजा], पृष्ठ ५३

६१. वही. [प्रेयसी], पृष्ठ १२८

६२. वही. [प्रेयसी], पृष्ठ १२५

६३. वही. [तुलसीदास], पृष्ठ १७३

६४. वही. [तरंगो के प्रति], पृष्ठ ७२

६५. वही. [तरंगो के प्रति], पृष्ठ ७२

६६. वही. [प्रपात के प्रति], पृष्ठ १२१

६७. वही. [वसंत आया], पृष्ठ २५

६८. वही. [जुही की कली], पृष्ठ १४

६९. वही. [नाचे उसपर श्यामा], पृष्ठ १३३

७०. वही. [[स्मृति], पृष्ठ १०५

७१. वही. [सन्ध्या सुंदरी], पृष्ठ २२

७२. वही. [विधवा], पृष्ठ ५७

७३. डॉ. रामखेलावन पाण्डेय : गीतिकाव्य, पृष्ठ १४

७४. वही., पृष्ठ ३२

७५. निराला : " अपरा " [वसन्त आया], पृष्ठ ४५

७६. वही. [नुपूर के स्वर मंद रहे], पृष्ठ ४१

७७. वही. [यमुना के प्रति], पृष्ठ ९२

७८. वही. [अर्चना], पृष्ठ १८५

७९. वही. [पावन करो नमन], पृष्ठ २२

८०. वही. [सहस्त्राब्दी], पृष्ठ १७९

८१. वही. [जागो फिर एक बार – २], पृष्ठ १८

८२. वही. [जागो जीवन धनि के], पृष्ठ ३६

८३. वही. [बन्दू पद सुन्दर तब], पृष्ठ ३५

८४. वही. [छत्रपति शिवाजी का पत्र], पृष्ठ ७५

८५. वही. [दान], पृष्ठ १३२

८६. वही. [तोडती पत्थर], पृष्ठ २९

८७. वही. [विधवा], पृष्ठ ५७

८८. वही. [सरोज स्मृति], पृष्ठ १४६

८९. वही. [प्रेयसी], पृष्ठ १२३

९०. वही. [फूल नयन ये], पृष्ठ ७५

९१. वही. [यामिनी जागी], पृष्ठ २४

९२. वही. [छत्रपति शिवाजी का पत्र], पृष्ठ ७५

९३. वही. [सरोज स्मृति], पृष्ठ १४६

९४. डॉ. बुध्दसेन निहार : विश्व कवि निराला, पृष्ठ १९७

९५. निराला : "अपरा" [तुम और मैं], पृष्ठ ६८

९६. वही. [प्रभाती], पृष्ठ २८

९७. वही. [विफल वासना], पृष्ठ ११९

९८. वही. [मरण दृश्य], पृष्ठ १४२

९९. वही. [आये घन पावस के], पृष्ठ ७४

१००. वही. [प्रेयसी], पृष्ठ १३३

१०१. वही. [जागृति में सुप्ति थी], पृष्ठ ३८
१०२. वही. [जुही की कली], पृष्ठ १४
१०३. डॉ. धिरेंद्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश, पृष्ठ ८०५
१०४. डॉ. हरीशंकर परसाई – सदाचार की ताबीज, [कैफियत,], पृष्ठ, १०
१०५. डॉ. नगेंद्र – आस्था के चरण – , पृष्ठ २९३
१०६. डॉ. विरेन्द्र मेहन्दीरत्ता – आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य, पृष्ठ १६
१०७. डॉ. जेरामचन्द्रन नायर – आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, पृष्ठ ४७
१०८. वही. ', पृष्ठ ४८
१०९. डॉ. बच्चनसिंह – क्रांतिकारी कवि निराला, पृष्ठ १४१
११०. डॉ. कृष्णदेव झारी – युगकवि निराला, पृष्ठ १०४
१११. निराला : "अपरा" [वनबेला], पृष्ठ ६१
११२. वही. [सरोज स्मृति], पृष्ठ १४६
११३. वही. [सरोज स्मृति], पृष्ठ १४६
११४. वही. [सरोज स्मृति], पृष्ठ १४६
११५. वही. [हिन्दीसुमनों के प्रति], पृष्ठ ३४
११६. वही. [तुलसीदास], पृष्ठ १७३
११७. वही. [तोडती पत्थर], पृष्ठ २९
११८. वही. [दान], पृष्ठ १२९
११९. वही. [विफल वासना], पृष्ठ ११९